



..... इंडियाज़ फास्टेस्ट ग्रोइंग न्यूज़ पेपर.....

दिल्ली में नहीं चलेगे राष्ट्रीय मुद्दे,  
जनता स्थानीय मुद्दे पर करेगी वोट

देश के आर्थिक विकास में  
पर्यावरण का भी रखना होगा ध्यान



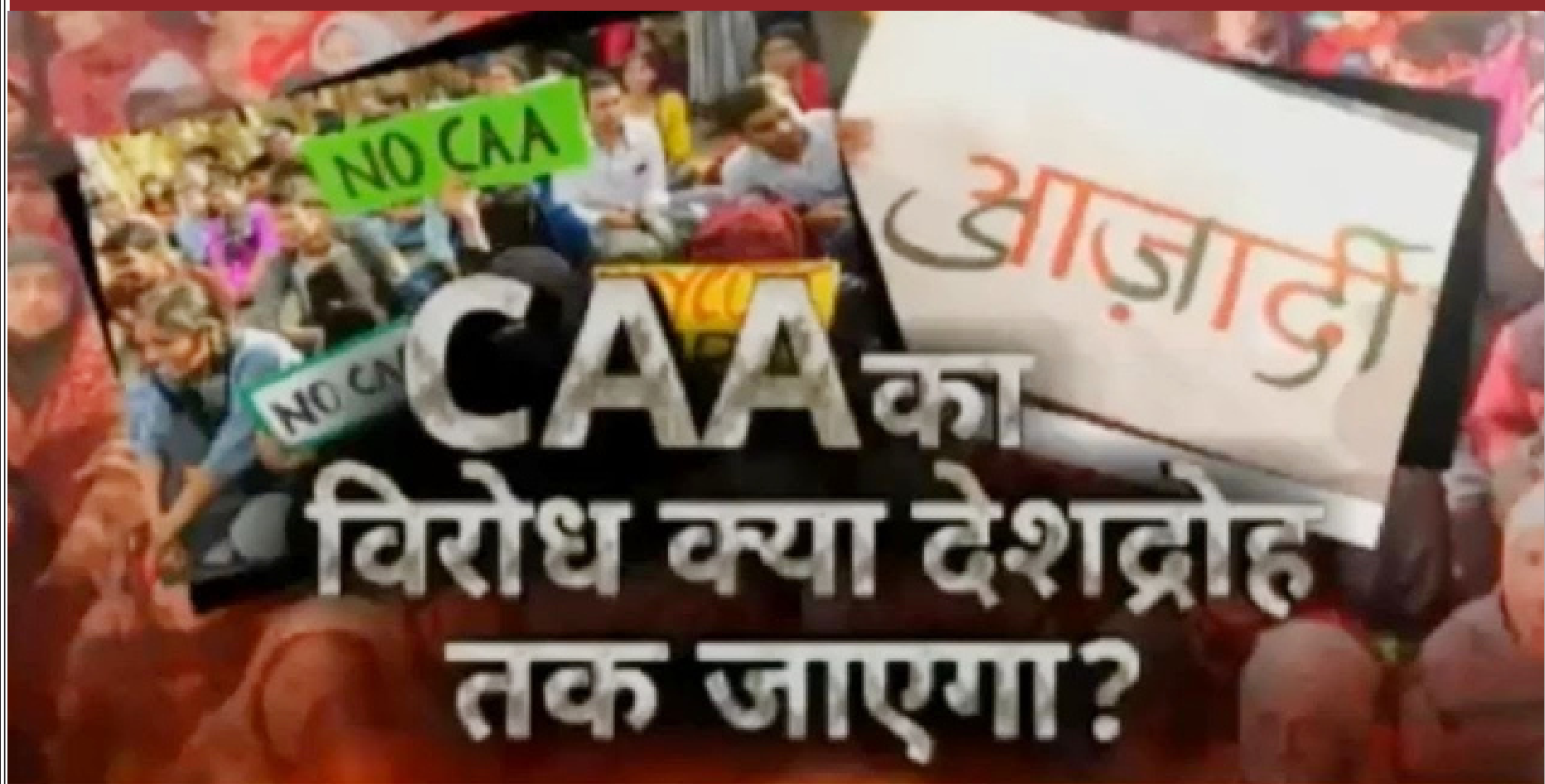
# सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17  
अंक-11  
मासिक  
1 फरवरी 2020  
पृष्ठ-12  
मूल्य- पाँच रुपये

## जिन्ना वाली आजादी



सीसीए का विरोध करने वाले नेताओं को  
इतिहास नहीं करेगा माफ p5



मेरे पिता का मेरे पद्मश्री सम्मान से क्या  
लेना-देना -अदनान सामी p12



अन्दर के पृष्ठ पर.....

समस्याएं सुलझाने गये केन्द्रीय मंत्रियों  
ने लोगों का दिल भी जीता P-6

जामिया फायरिंग -हम बच्चों को कलम  
दे रहे हैं, वे दे रहे हैं बंदूक P-12

आजकल चरित्र का नहीं पैसा कमाने  
का पाठ पढ़ाया जाता है P-2

बॉलीवुड-पाई-पाई को मोहताज ये  
बॉलीवुड सितारे P-11

## सम्पादक की कलम से

पानी की असल किमत्त वही आदमी समझता है, जो तपते रेगिस्तान में एक बूंद पानी की खोज के लिए मीलों भटका हो। वह शख्स पानी की कीमत क्या जाने, जो नदी के पास रहता है। देश के कई राज्यों में पेयजल की भारी समस्या है और उसके अधिक विकराल होने की संभावनाओं की चेतावनी बहुत समय से दिये जाने के बावजूद हम जागरूक नहीं हैं। नीति आयोग ने अपनी एक रिपोर्ट में अगले ही साल 21 शहरों में भूजल खत्म होने की संभावना व्यक्त करते हुए एक फिर चेताया है।

देश के जो क्षेत्र जल संकट की स्थिति का सामना कर रहे हैं, उन क्षेत्रों में एक बाल्टि पानी की कीमत व्यक्ति या मनुष्य के जीवन से अधिक है। वहाँ पर गर्मी में तो लोग प्रातःकाल से ही जल की व्यवस्था में जुट जाती हैं। पिछले साल महाराष्ट्र के सूखा प्रभावित मराठवाड़ा के लातूर जिले के लोगों को पीने का पानी ट्रेन में भरकर पहुंचाया गया था। देश की राजधानी दिल्ली के ही कई इलाकों में पानी का संकट रहता है। आने वाले समय में ये संकट और बढ़ सकता है। इसी संकट की ओर नीति आयोग की चेतावनी सामने आयी है, जिन शहरों में भूजल समाप्त होने की संभावना जताई गई है उनमें दिल्ली, गुरुग्राम, गांधीनगर, यमुनानगर, बेंगलुरु, इंदौर, अमृतसर, लुधियाना, जालंधर, मोहाली, पटियाला, अजमेर, बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, चेन्नई, आगरा, गाजियाबाद इत्यादि शामिल हैं। नीति आयोग की रिपोर्ट बड़े खतरे का संकेत दे रही है। भारत में पुराने जमाने में तालाब, बावड़ी और नलकूप थे, तो आजादी के बाद बांध और नहरें बनाईं। वक्त के बदलने के साथ-साथ सोच भी बदली, अति भोगवाद बढ़ा। संयम का सूत्र छूट गया। आधुनिक सभ्यता की सबसे बड़ी मुश्किल यही है कि प्रकृति में निहित संदेश को हम सुन नहीं पा रहे हैं। जलसंकट पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है।

कुछ समय पूर्व पाकिस्तान से विवाद हो जाने पर भारत द्वारा सिंधु नदी के प्रवाह को रोक कर पानी की उपलब्धता बाधित करने की चेतावनी दी गई थी। जबकि देश में ही पानी की अनुपलब्धता की समस्या पूरे राष्ट्र में पिछले 10-15 साल से चल रही है। इसके मूल में नियमित रूप से वर्षा का न होना तथा सूखा पड़ते रहना तथा सरकार की गलत नीतियां भी हैं। पानी की उपलब्धता की स्थिति को देखते हुए यह लगने लगा है कि विश्वयुद्ध हो या न हो, पर हर गली-मोहल्ले में, शहर-शहर में, गांव-गांव में पानी के लिए 10-15 वर्ष में ही युद्ध होंगे और भाईचारे के साथ रह रहे पड़ोसी पानी के लिए आपस में लड़ेंगे।

वर्ष 1998 की एनडीए सरकार ने इस ओर अपनी रुचि प्रदर्शित की थी, तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी ने सड़कों की भांति नदियों को जोड़ने की आवश्यकता व्यक्त करते हुए उपक्रम किये किन्तु अभी तक इस दिशा में बात आगे नहीं बढ़ी। कभी धन का अभाव, कभी राज्य सरकारों में सहमति नहीं बनने तो कभी स्वयंसेवी संगठनों और पर्यावरणविदों के एक वर्ग की आशंकाओं और विरोधों के चलते कुछ नहीं हुआ। अंततः 2012 में सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र से पूछ ही लिया कि नदियों को जोड़ने के मामले पर सरकार क्या कर रही है। जहां तक इस मामले में पहल और परिणामों की बात है तो इस दिशा में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा अपने स्तर पर नर्मदा और शिप्रा नदी को जोड़ने से मालवा क्षेत्र के किसानों के चेहरों पर मुस्कान बढ़ गई थी।

नीति आयोग के एक ताजा सर्वे के अनुसार भारत में 60 करोड़ आबादी जल संकट से जूझ रही है। प्रदूषित जल के उपभोग से भारत में हर साल 2 लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है। यूनिसेफ द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़े के अनुसार भारत में दिल्ली और मुंबई जैसे महानगर जिस प्रकार पेयजल संकट का सामना कर रहे हैं, उससे लगता है कि 2030 तक भारत के 21 महानगरों का जल पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा और वहां पानी अन्य शहरों से लाकर उपलब्ध कराना होगा। जल से जुड़ी चुनौतियों को स्वीकार कर हम भारतीयों को संकल्पित होना होगा इन चुनौतियों एवं समस्याओं से जूझने के लिये।

## आजकल चरित्र का नहीं केवल पैसा कमाने का पाठ पढ़ाया जाता है

अहंकार से परेशान लोगों की बड़ी दुनिया है, जहां दूसरों के अहंकार से परेशान लोग कम हैं और खुद के अहंकार से परेशान ज्यादा। बड़ी समस्या यह है कि हमें दूसरों का अहं तो दिखता है, लेकिन अपना नहीं। अपने भीतर का अहंकार देखें और अहंकारमुक्त होने का प्रयत्न करें।



इस दुनिया में हर व्यक्ति दुःखी है और दुखों से परेशान है, असफल होने के डर में जी रहा है। इस परेशानी से मुक्ति भी चाहता है लेकिन प्रयास अधिक दुःखी एवं असफल होने के ही करता है। हर व्यक्ति का ध्यान अपनी सफलताओं पर कम एवं असफलताओं पर अधिक टिका है। सकारात्मक नजरिया बनाने से ही असफलता की धुंध हट सकती है एवं सफलता की धूप खिल सकती है। ये हम पर ही है कि हम चाहें तो बिखर जाएं या पहले से बेहतर बन जाएं। आप बुरी किस्मत कहकर खुद को दिलासा भी दे देते हैं। लेकिन, सच यही है कि यह भाग्य पर नहीं, आप पर निर्भर करता है। आप वही बन जाते हैं, जो आप चुनते हैं। लेखक स्टीफन कोवे कहते हैं, 'मैं अपने हालात से नहीं, फैसलों से बना हूँ।'

वह व्यक्ति बहुत दुःखी है जो पूर्वाग्रह से ग्रस्त है। यह सही है कि हम सबकी एक सामाजिक जिंदगी है। हमें उसे भी जीना होता है। हम एक-दूसरे से मिलते हैं, आपस की कहते-सुनते हैं। हो सकता है कि आप बहुत समझदार हों। लोग आपकी सलाह को तवज्जो देते हों। पर यह जरूरी नहीं कि आप ही सबकुछ हो, आपको ही सारा ज्ञान हो। इस तरह का 'हम सब जानते हैं' का भाव चित्त को शांत नहीं होने देता। अहं से अहं टकराते रहते हैं। शक व संदेहों की कड़ियां बढ़ती जाती हैं। जहां जरूरत ठहरने की होती है, हम दौड़ते चले जाते हैं। संभावनाओं का पूरा आकाश हमारे इंतजार में होता है और हम भटकते रह जाते हैं। यह भटकन ही सारे दुःखों, परेशानियों एवं समस्याओं का कारण है।

इस तरह के हठ एवं जड़ कोटि के लोग समझाने पर भी समझ नहीं पाते हैं या समझना नहीं चाहते, जो समझना नहीं चाहता, उसे समझाया नहीं जा सकता। कहावत है कि आप घोड़े को जलाशय तक ले जा सकते हैं, किन्तु उसे पानी पीने के लिए बाध्य नहीं कर सकते। जो यह धार कर बैठा है कि मुझे समझना नहीं है, उन्हें ब्रह्माजी भी आ जाएं तो भी समझा नहीं सकते। रात-दिन कानों के परदों से हजारों शब्द व ध्वनियां गुजरती हैं। हम कुछ पर ही गौर करते हैं। उनमें भी बहुत कम शब्द होते हैं, जो दिल को छू पाते हैं। दरअसल, हमारे सुनने और समझने के बीच एक दूरी होती है। जरूरी नहीं जो सुना, उसे वैसा ही समझ लिया जाए। रूमी तो कहते हैं, 'जब कान ध्यान से सुनते हैं तो वे आंख बन जाते हैं।' पर शब्द अगर दिल के कानों तक नहीं जाते, तो कुछ नहीं घटता।' इस बात का पता लगाने की कोशिश करें कि आपको अपने जीवन में किन चीजों से शिकायते हैं, क्यों आप मुस्कराते नहीं हैं, क्यों आप दूसरों के करीब जाने से हिचकिचाते हैं और आपको क्यों लगता है कि सिर्फ आप ही सब कुछ जानते हैं और जो आप सोचते हैं, वही अंतिम सत्य है।

जीवन कभी एक-सा नहीं रहता, इसलिए स्थायी सुरक्षा जैसा कोई पल नहीं होता। इसलिए अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रयास कीजिए। आपके जो डर हैं, उनसे मुंह छिपाने के बजाय उनका सामना कीजिए। यह अच्छी बात है कि सकारात्मकता से हमें आगे बढ़ने की ऊर्जा मिलती है, लेकिन यह भी जरूरी नहीं कि हमेशा सब कुछ खूबसूरत, सहज और सकारात्मक ही हो। इसलिए परेशानियों का सामना भी पूरी ऊर्जा के साथ करें। हमेशा खुद को सुरक्षा के घेरे में न बांधें, चुनौतियां जरूरी हैं सफल जीवन के लिये, इसलिये चुनौतियों से भागे नहीं, उनका सामना करें। आप

भी इंसान हैं और आपसे भी गलती हो सकती है, इसका अर्थ यह नहीं कि आप कर्म करना ही छोड़ दें। गलतियों से न घबराएं, उनमें सुधार करते रहें। गलती एक ऐसा अनुभव है, जो आपको अगली बार सही काम करने के लिए प्रेरित करता है।

अहंकार से परेशान लोगों की बहुत बड़ी दुनिया है, जहां दूसरों के अहंकार से परेशान लोग कम हैं और खुद के अहंकार से परेशान ज्यादा। सबसे बड़ी समस्या यह है कि हमें दूसरों का अहं तो दिखता है, लेकिन अपना नहीं। अपने भीतर का अहंकार देखें और अहंकारमुक्त होने का प्रयत्न करें। लेखिका स्पिनेजा कहती हैं, 'अहंकारी व्यक्ति अपने अच्छे काम की और दूसरों के खराब काम की गिनती ही करता रहता है।' यह अहंकार ही है जिसके चलते सब चाहते हैं कि उनके आसपास वाले उन्हें सुनें, उनका अनुसरण करें। जैसा वह कह रहे हैं, वैसा ही करें। पर क्या ऐसा हो पाता है? ज्यादातर यही कहते हुए मिलते हैं कि डराए-धमकाए बिना काम ही नहीं होता। नतीजा, कहने और सुनने वाले के बीच एक दूरी ही बनी रहती है और नयी-नयी समस्याएं पैदा करती रहती हैं। मैनेजमेंट गुरु ब्रायन ट्रेसी कहते हैं, 'किसी भी क्षेत्र में प्रबंधन का एक ही अचूक नियम है। दूसरों से उसी तरह काम करवाएं, जिस तरह आप चाहते हैं कि दूसरे आप से काम करवाएं।'

मैनेजमेंट का सिद्धांत है कि कर्मचारी को अधिकारी के संकेत को समझना चाहिए। दूसरे शब्दों में दृष्टांत की भाषा में कहा गया कि कर्मचारी को अपने अधिकारी का महाराणा प्रताप वाला चेतक होना चाहिए। चेतक घोड़े की समझ-बूझ और स्वामीभक्ति प्रसिद्ध है। अगर ऐसे कर्मचारी हों तो कंपनी का बहुत विकास होगा। ऐसे लोगों का जीवन भी सुखी होता है। लेकिन आज यह बात देखने में नहीं आती। यही कारण है कि हर व्यक्ति का अपने काम के प्रति उत्साह कम होता जा रहा है। कितने ही काम ऐसे होते हैं, जो रोज जेहन में आते हैं और उन्हें हम बिना कुछ किए आगे के लिए खिसका देते हैं। हमारे कितने ही सपने और विचार इसी तरह टलते-टलते अतीत बन चुके हैं। और फिर हमें लगता है कि जिंदगी भी खिसकते-खिसकते ही बीत रही है। दरअसल हम जानते ही नहीं कि आखिर हम चाहते क्या हैं? हम जो चाहते हैं और उसे पूरा करने के लिए जो करना है, इस बीच की दूरी को कम करना ही सफलता दिलाता है।

आज की सबसे बड़ी समस्या यह है कि ज्ञान का विकास तो बहुत हो रहा है, किन्तु आग्रह को कम करने की साधना नहीं हो रही है। समस्या यह भी है कि चरित्र का पाठ भी नहीं पढ़ाया जाता। केवल पैसा कमाने का पाठ पढ़ाया जाता है। अब कौन समझाए कि गाली के बदले में गाली देना तो गाली देने वाले की श्रेणी में आना है। सफलता सिर पर जल्दी चढ़ती है और असफलता दिल पर। जीत के नशे में झुमते हुए को हार नहीं दिखती और हारे हुए को जीत की कोई उम्मीद नजर नहीं आती। लेकिन, असली जीत उनकी होती है जो सफलता को सिर नहीं चढ़ने देते और हार को दिल से नहीं लगाते। लेखक क्रिस गार्डनर कहते हैं, 'समस्याओं को हल नहीं कर पाना ठीक है, पर उनसे भागना, बिल्कुल नहीं।' हार हो या जीत, हमें अपना सौ प्रतिशत देने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। यही है सार्थक एवं सफल जीवन का मार्ग, नये जीवन की शुरुआत।



दिल्ली में विधानसभा चुनाव की घोषणा हो चुकी है और चुनावी सरगर्मियां गरमा रही हैं। इन चुनावों में भाजपा, कांग्रेस एवं आप के बीच संघर्ष होता हुआ दिखाई दे रहा है, दिल्ली के लोग वर्तमान नेतृत्व का विकल्प खोज रहे हैं जो सुशासन दे सके, विकास की अवरूद्ध स्थितियों के बीच कोई आश्वासन बने एवं जनता की बढ़ती परेशानियों पर नियंत्रण स्थापित करें। सभी पार्टियां सरकार बनाने का दावा पेश कर रही हैं और अपने को ही विकल्प बता रही हैं तथा मतदाता सोच रहा है कि दिल्ली में नेतृत्व का निर्णय मेरे मत से ही होगा। यह तय है कि मतदाता ही दिल्ली के नेतृत्व को निश्चित करेगा।

दिल्ली के चुनाव इस बार भाजपा के लिये बड़ी चुनौती हैं, संभवतः इन चुनावों के परिणाम भाजपा के लिये ज्यादा महत्वपूर्ण इसलिये है कि उसने पिछले विधानसभा चुनावों में राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र एवं झारखण्ड जैसे महत्वपूर्ण प्रांत खो दिये हैं। दिल्ली के चुनाव परिणाम उसकी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। भाजपा की पिछली चुनावी रणनीति के केंद्र में राष्ट्रीय मुद्दे हमेशा छापे रहे हैं। कुछ चुनावों को छोड़ दें तो अब तक उसके नेता जनता के बीच राम मंदिर, अनुच्छेद 370, पाकिस्तान और तीन तलाक जैसे संवेदनशील विषयों पर बोलते रहे हैं, लेकिन दिल्ली विधानसभा चुनाव इनमें अपवाद हो सकता है और उसे ऐसा करना ही होगा। रणनीति के तहत भाजपा दिल्ली में स्थानीय मुद्दों को प्रमुखता से उठाएगी।

पार्टी की एक उच्च स्तरीय मीटिंग में सभी नेताओं को इससे जुड़े निर्देश दिये भी गए हैं। प्रमुख मुद्दों की पहचान कर प्रदेश के विशेष नेताओं को उन मुद्दों पर काम करने की जिम्मेदारी भी सौंप दी गई है। कांग्रेस की स्थिति दिल्ली में भी मजबूत दिखाई नहीं दे रही है। आम आदमी पार्टी की स्थिति अवश्य मजबूत दिखाई दे रही है, वह भाजपा और कांग्रेस दोनों ही मुख्य पार्टियों के लिये गंभीर चुनौती बनी हुई है। अरविन्द केजरीवाल ने अपने कार्यकाल में अन्तिम पांच-छह माह में शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास, जल, बिजली एवं अन्य स्थानीय समस्याओं पर सकारात्मक वातावरण बनाकर जनता के मन में जगह बना ली है।

आज दिल्ली को एक सफल एवं सक्षम नेतृत्व की अपेक्षा है, जो राष्ट्रहित के साथ-साथ दिल्ली के विकास को सर्वोपरि माने। दिल्ली को एक अर्जुन चाहिए, जो मछली की आंख पर निशाने की भांति भ्रष्टाचार, राजनीतिक अपराध, महंगाई, बेरोजगारी, वायु प्रदूषण, पानी-बिजली, शिक्षा-स्वास्थ्य, सीलिंग व आर्थिक मंदी एवं पूर्ण राज्य का दर्जा आदि मुद्दे एवं समस्याओं पर ही अपनी आंख गड़ाए रखे। लेकिन दिल्ली के राजनीतिक परिवेश एवं तीनों राजनीतिक दलों की वर्तमान स्थितियों को देखते हुए बड़ा दुखद अहसास होता है कि किसी भी राजनीतिक दल में कोई अर्जुन नजर नहीं आ रहा जो मछली की आंख पर निशाना लगा सके। कोई युधिष्ठिर नहीं जो धर्म का पालन करने वाला हो। ऐसा कोई नेता नजर नहीं आ रहा जो स्वयं को संस्कारों में ढालकर, मजदूरों की तरह श्रम करने का प्रण ले सके। जो लोग किन्हीं आदर्शों एवं मूल्यों के साथ राजनीति में उतरे थे परन्तु राजनीति की चकाचौंध ने उन्हें ऐसा धृतराष्ट्र बना दिया कि मूल्यों की आंखों पर पट्टी बांध ये जनता का भाग्य बनाने की बजाय अपने राजनीतिक जीवन की भाग्यरेखा बनाते रहे।

दिल्ली में 1731 कच्ची कॉलोनियों में मालिकाना हक का मुद्दा महत्वपूर्ण है। इस पर आप और कांग्रेस का कहना है कि केवल मालिकाना हक से कॉलोनियां नियमित नहीं हो जाती हैं।

# दिल्ली में नहीं चलेंगे राष्ट्रीय मुद्दे, जनता स्थानीय मसलों पर ही कसेगी वोट

दिल्ली में 1731 कच्ची कॉलोनियों में मालिकाना हक का मुद्दा महत्वपूर्ण है। इस पर आप और कांग्रेस का कहना है कि केवल मालिकाना हक से कॉलोनियां नियमित नहीं हो जाती हैं। जबकि यही ऐसा मुद्दा है जिसे भाजपा दिल्ली में जीत का माध्यम बनाना चाहती है।



ललित गर्ग

दिल्ली की राजनीति विसंगतियों एवं विषमताओं से ग्रस्त है। राजनीतिक दल ईमानदार और पढ़े-लिखे, योग्य लोगों को उज्जीदवार बनायेंगे, ऐसी उज्जीद नजर नहीं आती एवं राजनीति में सुधार की अवधारणा अभी संदिग्ध ही दिखाई दे रही है। फिर भी हम आशा करते हैं कि कोई मूल्यों की राजनीति के रास्ते पर चले और राजनीति को विकृतियों से छुटकारा दिलाये। इसके लिये यह चुनाव एक क्रांति का माध्यम बनना चाहिए, दिल्ली को सज्जपूर्ण क्रांति की नहीं, सतत क्रांति की आवश्यकता है। ऐसी क्रांति जो देश-सेवा के स्थान पर स्व-सेवा में ही एक सुख मानने वालों से निजात दिलाये।

जबकि यही ऐसा मुद्दा है जिसे भाजपा दिल्ली में जीत का माध्यम बनाना चाहती है। सीएए दिल्ली के लिये भी महत्वपूर्ण मुद्दा है, लेकिन इस मुद्दे पर दिल्ली में कई जगह हिंसा हुई। 'आप' और कांग्रेस इसका विरोध कर रही हैं, जबकि भाजपा दोनों पार्टियों पर हिंसा एवं अराजकता भड़काने का आरोप लगा रही है। दिल्ली के लिये स्वास्थ्य एवं शिक्षा महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, 'आप' मोहल्ला क्लीनिक और मुफ्त इलाज जैसी सुविधाओं पर जोर दे रही है जबकि भाजपा 'आप' पर आरोप लगा रही है कि उसने आयुष्मान योजना लागू नहीं करने दी। 'आप' के लिए शिक्षा का मुद्दा विशेष महत्व रखता है। पार्टी शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यों को जनता के सामने जोर-शोर से रखेगी। शिक्षा के लिए बजट का भी विशेष आवंटन किया गया है। जबकि इस मुद्दे पर भाजपा की स्थिति प्रश्नों से घिरी है, क्योंकि दिल्ली में तीनों नगर निगमों पर भाजपा का कब्जा है और उनके द्वारा संचालित स्कूलों की स्थिति दयनीय है।

'आप' नई बसें और सड़कों में सुधार को लेकर जनता के बीच जा सकती है। लेकिन आप ने इस दिशा में दिल्ली की जनता को निराशा ही किया है। भाजपा ईस्टर्न-वेस्टर्न पेरिफेरल-वे को लेकर किए गए कार्य को केंद्र में रखेगी। केजरीवाल दावा कर रहे हैं कि दिल्ली में मुफ्त बिजली-पानी की सुविधा आगे भी जारी रहेगी। भाजपा पांच गुना और कांग्रेस 600 यूनिट तक सब्सिडी का वादा कर रही है। लेकिन प्रश्न है कि मुफ्त की यह

संस्कृति लोकतंत्र में क्यों एवं कैसे जायज है? क्या जनता को रोजगार एवं निर्माण कार्यों की ओर अग्रसर करने की बजाय उसे अकर्मण्य नहीं बनाया जा रहा है? पानी की गुणवत्ता एवं वायु प्रदूषण जैसे मुद्दे भी इन चुनावों में उठेंगे। सीलिंग व आर्थिक मंदी एवं पूर्ण राज्य का दर्जा जैसे मुद्दों पर तीनों दलों की भावी रणनीति भी इन चुनावों में जीत का माध्यम बनेगी।

दिल्ली की राजनीति विसंगतियों एवं विषमताओं से ग्रस्त है। राजनीतिक दल ईमानदार और पढ़े-लिखे, योग्य लोगों को उज्जीदवार बनायेंगे, ऐसी उज्जीद नजर नहीं आती एवं राजनीति में सुधार की अवधारणा अभी संदिग्ध ही दिखाई दे रही है। फिर भी हम आशा करते हैं कि कोई मूल्यों की राजनीति के रास्ते पर चले और राजनीति को विकृतियों से छुटकारा दिलाये। इसके लिये यह चुनाव एक क्रांति का माध्यम बनना चाहिए, दिल्ली को सम्पूर्ण क्रांति की नहीं, सतत क्रांति की आवश्यकता है। ऐसी क्रांति जो देश-सेवा के स्थान पर स्व-सेवा में ही एक सुख मानने वालों से निजात दिलाये। आधुनिक युग में नैतिकता जितनी जरूरी मूल्य हो गई है उसके चरितार्थ होने की सम्भावनाओं को उतना ही कठिन कर दिया गया है।

ऐसा लगता है मानो ऐसे तत्व पूरी तरह छापे गए हैं। खाओ, पीओ, मौज करो। सब कुछ हमारा है। हम ही सभी चीजों के मापदण्ड हैं। हमें लूटपाट करने का पूरा अधिकार है।

हम समाज में, राष्ट्र में, संतुलन व संयम नहीं रहने देंगे। यही आधुनिक सभ्यता का घोषणा पत्र है, जिस पर लगता है कि हम सभी ने हस्ताक्षर किये हैं। भला इन स्थितियों के बीच वास्तविक जीत कैसे हासिल हो? आखिर जीत तो हमेशा सत्य की ही होती है और सत्य इन तथाकथित राजनीतिक दलों के पास नहीं है। इसके लिये जरूरी है कि मतदाता जागे। आज भी मतदाता विवेक से कम, सहज वृत्ति से ज्यादा परिचालित हो रहा है। इसका अभिप्रायः यह है कि मतदाता को लोकतंत्र का प्रशिक्षण बिल्कुल नहीं हुआ।

दिल्ली के इन चुनावों में हमें किसी पार्टी विशेष का विकल्प नहीं खोजना है। किसी व्यक्ति विशेष का विकल्प भी नहीं खोजना है। विकल्प तो खोजना है भ्रष्टाचार का, अकुशलता का, प्रदूषण का, भीड़तंत्र का, गरीबी के सत्राटे का, महंगाई का, राजनीतिक अपराधों का। यह सब लम्बे समय तक त्याग, परिश्रम और संघर्ष से ही सम्भव है। जिसका हार्द है कि स्वस्थ लोकतंत्र का सही विकल्प यही है कि हम ईमानदार, चरित्रवान और जाति-सम्प्रदाय से नहीं बंधे हुए व्यक्ति को अपना मत दें। सही चयन से ही दिल्ली का सही निर्माण होगा। धृतराष्ट्र की आंखों में झांक कर देखने का प्रयास करेंगे तो वहां शून्य के सिवा कुछ भी नजर नहीं आयेगा। इसलिए हे मतदाता प्रभु! जागो! ऐसी रोशनी का अवतरण करो जो दुर्योधनों के दुष्टों को नंगा करें और अर्जुन के नैक इरादों से दिल्ली के जन-जन को प्रेरित करें।

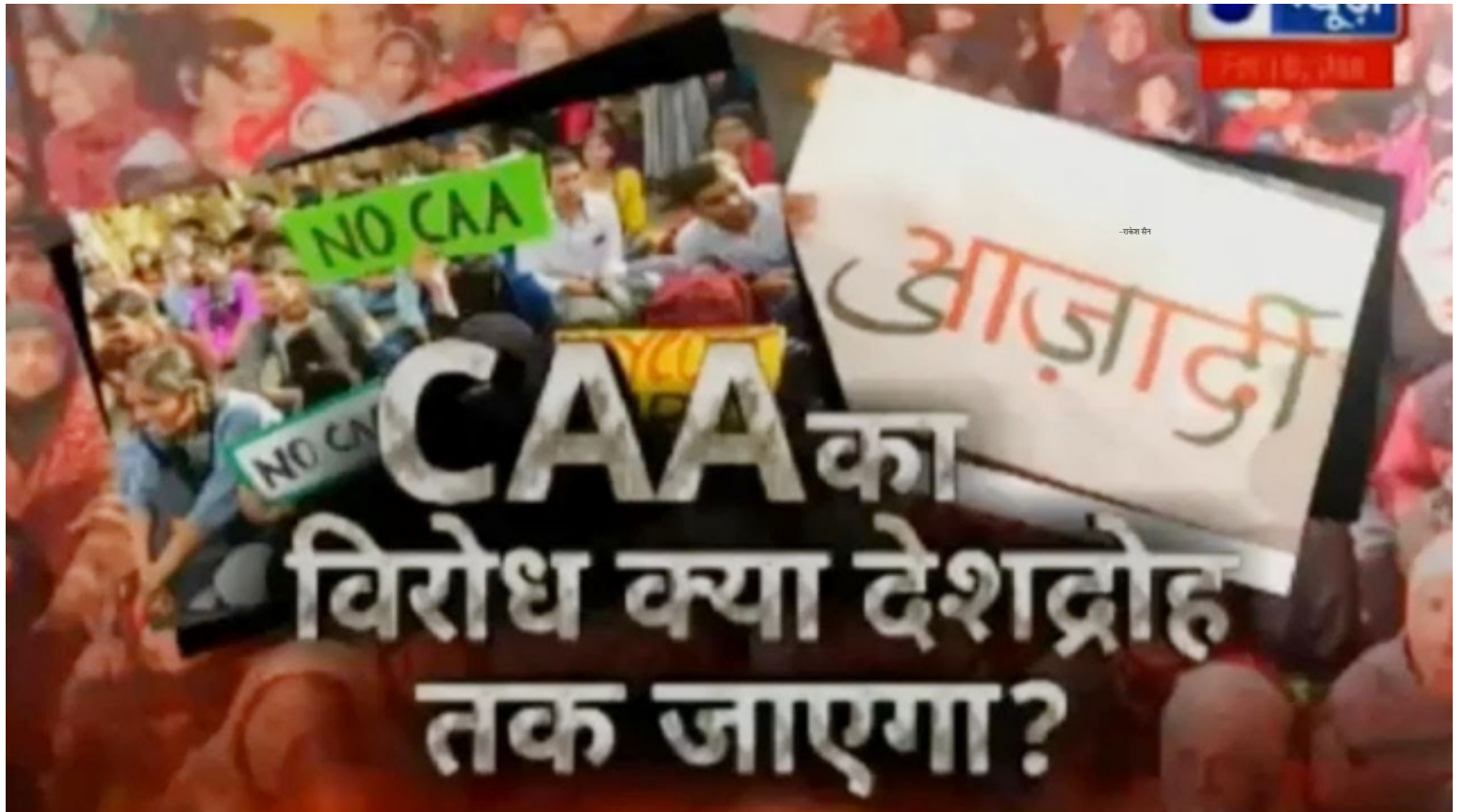


भारत और विश्व इतिहास पर पुस्तकें लिखते हुए नेहरू जी को उन वतनप्रस्त मुसलमानों जैसे कि हाकिम खान, इब्राहिम गारदी जो महाराणा प्रताप और मराठों की फौजों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर लड़ते हुए शहीद हुए, की याद नहीं थी। दारा शिकोह को उन्होंने शायद पढ़ा नहीं होगा। भारतीय संस्कृति-साहित्य का हिस्सा बन चुके कबीर, रसखान, रहीम, फरीद, दादू को उन्होंने कितना जाना, यह वो ही बता सकते थे। पता नहीं उन्होंने अबदुर रहीम खानखाना का यह दोहा 'जैसी रज मुनि पत्नी तरी, सो दूँदत गजरा' कभी सुना था या नहीं। उन्होंने मुसलमानों में भारतीय इतिहास, संस्कृति और राष्ट्रीयता का भाव जागृत करने के लिए कुछ नहीं किया, चाहते तो मुस्लिम समाज को राष्ट्रीय एकता की सबसे मजबूत कड़ी बन सकती थी। दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ, हुआ होता तो आज शाहीन बाग में जिन्ना वाली आजादी न मांगी जा रही होती, न ही तीन तलाक पर रोक के विरोध में कोई आस्तीन चढ़ाता व राममन्दिर निर्माण में कोई विरोधियों की कठपुतली बनता।

## ज्या हो गया है कुछ युवाओं को ?

# जिन्ना वाली आजादी का आखिर क्या अर्थ निकालें ?

भारतीय मुसलमान भी तो मलेशिया, इंडोनेशिया के मुसलमानों से सीख लेकर मलय संस्कृति की तरह भारतीय संस्कृति पर गर्व कर सकते थे। वह भी इंडोनेशिया मुसलमानों की तरह राम को पूर्वज मान सकते थे, परन्तु उनको राममन्दिर के खिलाफ खड़ा कर दिया गया।



देश में आधुनिक गणतन्त्र व्यवस्था के स्थापना की आज जयन्ती है। इसी दिन सन् 1950 को भारत द्वारा अधिनियम-1935 को हटाकर अपना संविधान लागू किया गया था। एक स्वतन्त्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए संविधान को 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा अपनाया गया और 26 जनवरी, 1950 को इसे एक लोकतान्त्रिक प्रणाली के साथ लागू किया गया। इसके लिए 26 जनवरी का दिन इसलिए चुना गया क्योंकि 1930 में इसी दिन कांग्रेस ने देश में पूर्ण स्वराज्य का संकल्प लिया था।

देश में गणतन्त्र की आधुनिक चरण लागू हुए 70 साल बीत चुके, आधुनिक सोपान इसलिए क्योंकि जनतन्त्र प्रणाली भारत के लिए कोई नई नहीं बल्कि किसी न किसी रूप में वैदिक काल से चली आ रही प्राचीन व्यवस्था रही है। हां इसे आधुनिक व व्यवस्थित रूप 1950 को दिया गया। आजादी के इन 72 और लोकतन्त्र के इन 70 सालों ने भारत ने अनेक उपलब्धियां हासिल कीं, जिस पर गर्व किया जा सकता है। हालांकि इस अल्पावधि में इमरजेंसी के हालातों से भी गुजरना पड़ा परन्तु लोकशक्ति ने लोकशाही को बचा लिया। देश व समाज के सम्मुख चुनौतियां व संकट हर युग में रहे हैं और आगे भी रूप बदल-बदल कर तरह-तरह के चुनौतियां सम्मुख आएंगी परन्तु वर्तमान में जिस तरह अकारण अशान्ति का महौल बनाया गया है उससे इस बात की आवश्यकता है कि हमारा गणतन्त्र गुणतन्त्र की तरफ भी बढ़े।

नागरिकता संशोधन विधेयक को लेकर जिस तरह से समाज के वर्ग विशेष को भड़काया जा रहा है और विधेयक के खिलाफ हो रहे प्रदर्शनों में जो प्रतिक्रियाएं आ रही हैं वे हमारे गणतन्त्र की गुणवत्ता पर सवालिया निशान लगा देती हैं। इन प्रदर्शनों में 'जिन्ना वाली आजादी' के नारों का क्या अर्थ निकाला जाए ? अगर देश के गण में राष्ट्रभाव के गुण होते तो क्या देश की राजधानी के बीचों बीच चल रहे धरनों में इस तरह की बेशर्मी होती ? देखा जाए तो ऐसे नारे लगाने वालों से अधिक कसूरवार वे राजनीतिक दल हैं जिन्होंने एक वर्ग विशेष को राष्ट्रभाव से जुड़ने ही नहीं दिया, उसे शरीयत, इफतार और वोटों के फतवों तक ही सीमित रखा।

कुछ दिन पहले देश के जाने माने रक्षा विशेषज्ञ व लेखक कैप्टन आर. विक्रम सिंह का लेख पढ़ कर आंखें खुल गई कि किस तरह एक वर्ग विशेष को योजनाबद्ध तरीके से अलग-थलग करके रखा गया। विभाजन के बाद पाकिस्तान इस्लामिक देश बना परन्तु भारत ने अपनी युगों की परम्परा का पालन करते हुए सर्वधर्म समभाव की नीति को अपनाया। ऐसे में मुसलमानों से भारतीय संस्कृति में मिश्रित होने की उम्मीद स्वाभाविक थी परन्तु अगर मुसलमान धर्मनिरपेक्ष हो जाते तो उनको वोट बैंक बनाए रखने की योजना बेकार हो जाती। इसलिए जरूरी था कि उनकी अलग बस्तियां, अलग पहचान और अलग संस्थाएं हों जो तुष्टिकरण की नीति पर चलते हुए किया भी गया।

भारतीय मुसलमान भी तो मलेशिया,

इंडोनेशिया के मुसलमानों से सीख लेकर मलय संस्कृति की तरह भारतीय संस्कृति पर गर्व कर सकते थे। वह भी इंडोनेशिया मुसलमानों की तरह राम को पूर्वज मान सकते थे, परन्तु उनको राममन्दिर के खिलाफ खड़ा कर दिया गया। उनको अरबों, तुर्कों के साथ जोड़ा गया। दरअसल, मुस्लिम समाज को भारतीयता के साथ जोड़े रखने की कोशिश ही नहीं हुई। राजनैतिक जरूरतों ने सांझी संस्कृति ही विकसित नहीं होने दी। आजादी से पहले इस बिखराव के लिए हम अंग्रेज सरकार, शाह वलीउल्ला, सैयद अहमद, अलामा इकबाल, मुहम्मद अली जिन्ना को दोषी मान सकते थे परन्तु आजादी के बाद तो हम ही अपने भाग्य विधाता थे।

भारत और विश्व इतिहास पर पुस्तकें लिखते हुए नेहरू जी को उन वतनप्रस्त मुसलमानों जैसे कि हाकिम खान, इब्राहिम गारदी जो महाराणा प्रताप और मराठों की फौजों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर लड़ते हुए शहीद हुए, की याद नहीं थी। दारा शिकोह को उन्होंने शायद पढ़ा नहीं होगा। भारतीय संस्कृति-साहित्य का हिस्सा बन चुके कबीर, रसखान, रहीम, फरीद, दादू को उन्होंने कितना जाना, यह वो ही बता सकते थे। पता नहीं उन्होंने अबदुर रहीम खानखाना का यह दोहा 'जैसी रज मुनि पत्नी तरी, सो दूँदत गजरा' कभी सुना था या नहीं। उन्होंने मुसलमानों में भारतीय इतिहास, संस्कृति और राष्ट्रीयता का भाव जागृत करने के लिए कुछ नहीं किया, चाहते तो मुस्लिम समाज को राष्ट्रीय एकता की सबसे मजबूत कड़ी बन सकती थी। दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ, हुआ

होता तो आज शाहीन बाग में जिन्ना वाली आजादी न मांगी जा रही होती, न ही तीन तलाक पर रोक के विरोध में कोई आस्तीन चढ़ाता व राममन्दिर निर्माण में कोई विरोधियों की कठपुतली बनता।

भारतीय गणतन्त्र में विसंगतियों की सूची यहीं पूरी नहीं होती, बल्कि इसकी फेहरिस्त लम्बी है जिनका वर्णन करने से पहले पाठकों को लगभग ग्यारह-बारह सौ साल पीछे ले जाना चाहूंगा। दक्षिण भारत में चेन्नई से 83 किलोमीटर की दूरी पर चेंगलपेट के पास एक कस्बा है उतीरामेरूर। यह नगर सन् 880 के दशक में चोलवंशी राजा परन्तगा सुन्दरा चोल के आधीन था। उस राजाओं के जमाने में भी ग्राम प्रशासन में गुणवत्ताशाली गणतन्त्र का जो अनोखा उदाहरण मिलता है, उससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारी सामाजिक व्यवस्था कितनी सुसंभ्य और उन्नत थी।

नगर के शिव मन्दिर की दीवारों पर चारों तरफ हमारे संविधान की धाराओं की तरह ग्राम प्रशासन से सम्बन्धित विस्तृत नियमावली उत्कीर्ण है, जिसमें ग्राम सभा के सदस्यों के निर्वाचन विधि का भी उल्लेख मिलता है। ग्रामसभा के निर्वाचन हेतु जो कुडमोलै पद्धति अपनाई जाती थी। कुडम का अर्थ होता है मटका और ओलै ताड़ के पत्ते को कहते हैं। गाँव के केन्द्र में कहीं एक बड़े मटके को रख दिया जाता था और नागरिक, उम्मीदवारों में से अपने पसन्द के व्यक्ति का नाम एक ताड़ पत्र पर लिख कर मटके में डाल देते थे। बाद में उसकी गणना होती और ग्राम सभा

के सदस्यों का चुनाव हो जाता। उस समय निर्वाचन के लिए जो शर्तें रखी गईं उनमें से तो कई आज भी सम्भव नहीं हैं। इनमें से उम्मीदवार की आयु 35 या उससे अधिक परन्तु 70 वर्ष से कम हो। वह मूलभूत शिक्षा प्राप्त और वेदों का ज्ञाता हो।

पिछले तीन वर्षों में उस पद पर न रहा हो। इसके अतिरिक्त जिसने अपनी आय का ब्योरा ना दिया हो, कोई भ्रष्ट आचरण का दोषी पाया गया, जिसने अपने कर न चुकाए हों, गृहस्थ रह कर परस्त्री गमन का दोषी हो, हत्यारा, मिथ्या भाषी और शराबी हो, दूसरे के धन का हनन किया हो, जो ऐसे भोज्य पदार्थ का सेवन करता हो जो मनुष्यों के खाने योग्य ना हो, वो चुनाव में हिस्सा ही नहीं ले सकता था। ग्राम सभा के सदस्यों का कार्यकाल वैसे तो 360 दिनों का था परन्तु इस बीच किसी सदस्य को अनुचित कर्मों के लिए दोषी पाए जाने पर बलपूर्वक हटाए जाने की भी व्यवस्था थी। हमें अपने आप से सवाल करना चाहिए कि क्या आज आधुनिक युग में भी हम अपनी शासन-प्रशासन प्रणाली में ऐसी शुचिता ला पाए हैं जो सदियों पहले हम में थी।

अपने गणतन्त्र में गुणात्मक सुधार के लिए अपने पूर्वजों के साथ-साथ दुनिया के विभिन्न हिस्सों में चल रहे सफल लोकतन्त्र से भी सीखना होगा। सभी समाजों व देशों की अच्छी बातों का अपने भीतर समावेश करना होगा और अपनी बुराइयों को पहचान कर उससे किनारा करना होगा।



# सीसीए का विरोध करने वाले नेताओं को इतिहास नहीं करेगा माफ

कुछ नेताओं द्वारा अपनी सियासी रेटियां सेंकने के लिए सरकार के प्रत्येक फैसले के खिलाफ जहर उगलना और उसे संविधान विरोधी बता कर बखेड़ा खड़ा करने को जनता समझती है और इतिहास गवाह है कि ऐसे नेताओं का राजनीतिक हिसाब जनता ने पूरी शिद्दत के साथ किया भी है।



अजय कुमार

विदेशी पैसे से पल रहे देश के मुट्ठी भर लोग और चंद नेता अगर सड़क पर आगजनी और हो-हल्ला मचाकर यह सोचते हैं कि वह भारत के भाग्य विधाता बन जाएंगे तो उन्हें अपने मन से यह गलत फहमी निकाल देनी चाहिए। कोई भी देश लोकतांत्रिक तरीके से चलता है। लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकार और उसके बनाए कानून का पालन करना देश के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी और कर्तव्य दोनों ही हैं। अगर सरकार के किसी फैसले से कोई खुश नहीं है तो भी उसे विरोध का रास्ता लोकतांत्रिक तरीके से ही चुनना अथवा न्याय की शरण में जाना होगा, जहां दूध का दूध और पानी का पानी हो जाता है। कुछ नेताओं द्वारा अपनी सियासी रेटियां सेंकने के लिए सरकार के प्रत्येक फैसले के खिलाफ जहर उगलना और उसे संविधान विरोधी बता कर बखेड़ा खड़ा करने के दुष्प्रचार को जनता अच्छी तरह से समझती है।

यह नहीं भूलना चाहिए कि अगर सरकार कोई गैर संवैधानिक कानून बनाती है तो सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटा कर उसे चुनौती दी जा सकती है। कई बार सरकार के गैर संवैधानिक फैसलों को सुप्रीम कोर्ट पलट भी चुका है। इसके कई बड़े उदाहरण हैं। आज भले ही कांग्रेस मोदी सरकार के तमाम फैसलों को संविधान विरोधी बता कर उसका विरोध कर रही हो लेकिन सच्चाई तो यही है

कि इस मामले में कांग्रेस की सरकारें ज्यादा बदनाम रहीं हैं। भले ही बात पुरानी हो, लेकिन इस बात को भुलाया नहीं जा सकता है कि अतीत में समय-समय पर कांग्रेस सरकारों के कई संविधान विरोधी निर्णय को सुप्रीम कोर्ट पलट चुका है। इस मामले में इंदिरा गांधी की सरकार का इतिहास काफी खराब रहा है।

सबसे पहले साल 1967 में शीर्ष अदालत ने गोलकनाथ मामले में एक अहम फैसला देते हुए कह दिया था कि संसद के पास यह अधिकार नहीं है कि वह नागरिकों के मौलिक अधिकारों को छीन सके या उनसे छेड़छाड़ भी कर सके। उस समय नेहरू जी की मृत्यु के बाद केन्द्र में इंदिरा गांधी की नई-नई सरकार बनी थी, लेकिन इंदिरा गांधी को सुप्रीम कोर्ट का फैसला चुभ गया। इसके बाद 24 अप्रैल 1973 की वह महत्वपूर्ण तारीख आई जो आज भी भारतीय न्यायपालिका के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज है। यही वह दिन था, जब देश की सबसे बड़ी अदालत ने भारतीय न्यायिक इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय लिखा था। इसी दिन वह ऐतिहासिक फैसला सुनाया गया था जो आज भी सुप्रीम कोर्ट के लिए सबसे महत्वपूर्ण नजिर बना हुआ है।

46 साल पहले सुप्रीम कोर्ट ने ‘केशवानंद

भारती बनाम केरल राज्य’ मामले में जो फैसला सुनाया था उससे तत्कालीन इंदिरा सरकार की चूल्हे हिल गई थीं। देश के इतिहास में यह पहला और आखिरी मौका था जब किसी मामले की सुनवाई के लिए 13 जजों की पीठ का गठन किया गया। इस पीठ ने अक्टूबर 1972 और मार्च 1973 के बीच लगभग 70 दिनों तक इस मामले की सुनवाई की। सैंकड़ों नजिरों और 71 देशों के संविधानों का अध्ययन करने के बाद इस पीठ ने 24 अप्रैल 1973 को कुल 703 पन्नों का फैसला सुनाया। यह फैसला क्या था और इतनी बड़ी पीठ के गठन की जरूरत ही क्यों पड़ी थी, इसे समझने के लिए उस वक्त के राजनीतिक माहौल को समझना बेहद जरूरी है।

गौरतलब है कि प्रधानमंत्री बनने के साथ ही इंदिरा गांधी की सुप्रीम कोर्ट से तनातनी शुरू हो गई थी। इंदिरा गांधी सब कुछ अपने नियंत्रण में कर लेना चाहती थीं लेकिन सुप्रीम कोर्ट लगातार उनके इन मंसूबों पर पानी फेरता रहा। सुप्रीम कोर्ट एवं इंदिरा सरकार के बीच लम्बे समय तक शह-मात का खेल चलता रहा। गोलकनाथ मामले के लगभग ढाई साल बाद इंदिरा गांधी ने देश के 14 बड़े बैंकों के राष्ट्रीयकरण का फैसला लिया। इसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई और कुछ ही महीनों के भीतर कोर्ट ने सरकार के इस फैसले को

असंवैधानिक करार दे दिया। इसके एक साल बाद जब इंदिरा गांधी ने रजवाड़ों को मिलने वाले ‘प्रिवी पर्स’ समाप्त करने का फैसला लिया तो उसे भी सुप्रीम कोर्ट ने असंवैधानिक ठहरा दिया।

उक्त तीनों ही बड़े मामलों में इंदिरा गांधी को लगातार सुप्रीम कोर्ट में हार झेलनी पड़ी। इससे बौखलाई इंदिरा सरकार ने सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्टों पर लगाम कसने की तैयारी शुरू कर दी। इंदिरा सरकार ने एक-एक कर संविधान में संशोधनों के जरिये सुप्रीम कोर्ट के उक्त तीनों फैसलों को पलट दिया। गोलकनाथ केस, बैंकों के राष्ट्रीयकरण और रजवाड़ों को मिलने वाले ‘प्रिवी पर्स’ के मामलों में सुप्रीम कोर्ट ने जो फैसले दिए थे, उन्हें संविधान संशोधनों के जरिये एक-एक कर रद्द कर दिया गया। इतना ही नहीं, इन संशोधनों से विधायिका को यह भी शक्तियां मिल गई कि वह नागरिकों के मौलिक अधिकारों में संशोधन करने के साथ ही उन्हें निरस्त भी कर सकती थी। इंदिरा गांधी इन संशोधनों के जरिये लगभग निरंकुशता की ओर बढ़ने लगी थी।

केशवानंद भारती का मामला काफी गंभीर था। इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह तय करने की थी कि क्या संसद के पास संविधान को किसी भी हद तक संशोधित करने का अधिकार है। क्या संसद चाहे तो नागरिकों के मौलिक अधिकारों में भी संशोधन कर सकती है और उन्हें छीन भी सकती है ? गोलकनाथ मामले में 11 जजों की पीठ यह फैसला दे चुकी थी कि संसद मौलिक अधिकारों से छेड़छाड़ नहीं कर सकती, लिहाजा इसी मुद्दे पर कोई नया फैसला लेने के लिए 11 जजों से भी बड़ी पीठ के गठन की जरूरत थी। इसीलिए मुख्य न्यायाधीश सर्व मित्र सीकरी की अध्यक्षता में देश के इतिहास में पहली और आखिरी बार 13 जजों की एक बेंच का गठन हुआ और केशवानंद भारती मामले की सुनवाई शुरू हुई।

दरअसल, तब सुप्रीम कोर्ट और तत्कालीन इंदिरा सरकार भारतीय संविधान के अनुच्छेद 368 में संविधान संशोधन से संबंधित प्रावधान को लेकर आमने-सामने आ गए थे। इस अनुच्छेद को ऊपरी तौर पर पढ़ने से लगता है कि संसद के पास संविधान में संशोधन करने की असीमित शक्तियां हैं, जबकि यह अनुच्छेद ऐसा कुछ नहीं कहता था कि संसद मौलिक अधिकारों में संशोधन नहीं कर सकती, लेकिन 70 के दशक में जिस तरह से इंदिरा गांधी की सरकार ने संविधान में लगातार संशोधन किये, उससे यह सवाल पैदा हुआ कि क्या संविधान अप्रत्यक्ष तौर से संसद के इस अधिकार के सीमित होने की बात करता है ? इसी सवाल का जवाब केशवानंद भारती मामले में 13 जजों को खोजना था।

करीब 70 दिनों की बहस के बाद 24 अप्रैल 1973 को कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया। यह फैसला 7-6 के न्यूनतम अंतर से दिया गया। यानी सात जजों ने पक्ष में फैसला दिया और छह जजों ने विपक्ष में। इस फैसले में छह के मुकाबले सात के बहुमत से जजों ने गोलकनाथ मामले के फैसले को पलट दिया यानी अब न्यायालय ने माना कि संसद मौलिक अधिकारों में भी संशोधन कर तो सकती है, लेकिन ऐसा कोई संशोधन वह नहीं कर सकती जिससे संविधान के मूलभूत ढांचे (बेसिक स्ट्रक्चर) में कोई परिवर्तन होता हो या उसका मूल स्वरूप बदलता हो।

केशवानंद भारती मामले में आए इस फैसले से स्थापित हो गया कि देश में संविधान से ऊपर कोई भी नहीं है, संसद भी नहीं। यह भी माना जाता है कि अगर इस मामले में

सात जज यह फैसला नहीं देते और संसद को संविधान से किसी भी हद तक संशोधन के अधिकार मिल गए होते तो शायद देश में गणतांत्रिक व्यवस्था भी सुरक्षित नहीं रह पाती।

इंदिरा की तरह राजीव गांधी ने भी मुस्लिम तुष्टिकरण की सियासत के चलते सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलटने में हिचक नहीं दिखाई थी। सुप्रीम कोर्ट ने जब अपने महत्वपूर्ण फैसले में एक मुस्लिम महिला शाहबानो को तलाक के बदले उसके शौहर से प्रत्येक माह गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया था तो कठमुल्लाओं के सामने नतमस्तक हुई राजीव सरकार ने सुप्रीम कोर्ट का गुजारा भत्ता देने का फैसला पलट दिया था, जिस पर राजीव सरकार की काफी किरकरी हुई थी।

वैसे कहा यह गया कि अयोध्या में भगवान श्री राम के मंदिर का ताला खुलवाने के चलते कुछ मुस्लिम नेता तत्कालीन प्रधामनंत्री राजीव गांधी से नाराज हो गए थे, जिन्हें मनाने के लिए ही उनकी सरकार ने शाहबानो को मामूली-सा गुजारा भत्ता नहीं मिलने दिया था। अफसोस की बात यह है कि जिस गांधी परिवार का इतिहास ही संविधान विरोधी कृत्य करने का है, उसी परिवार द्वारा संविधान बचाने का ढिंढोरा पीटने का नाटक किया जा रहा है ताकि मुस्लिम वोटरों को कांग्रेस के पाले में लाया जा सके जो तीन दशकों पूर्व कांग्रेस से नाराज होने के बाद उसके पास अभी तक लौटा नहीं है, जबकि मुस्लिम वोट बैंक के सहारे सपा-बसपा कई बार उत्तर प्रदेश में सरकार बना चुके हैं। सीएए का विरोध करने वाले नेताओं में चाहे ममता बनर्जी हों या फिर प्रियंका वाड़ा, मायावती, अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव आदि सब मुसलमान वोटरों को भेड़-बकरी की तरह हांकना चाहते हैं। वैसे भी मुसलमानों में व्याप्त अशिक्षा, कट्टरता हमेशा इस कौम के विकास की राह में आड़े आती रही है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भी इस बात का अहसास है कि तुष्टिकरण की सियासत करने वाले तमाम दलों के नेता और कथित बुद्धिजीवी गैंग के सदस्य समय-समय पर उनकी सरकार को लेकर भ्रांति फैलाते रहे हैं। आजादी के बाद से मुस्लिम वोट बैंक की सियासत करने वाले चंद नेताओं और देश में रहकर देश के साथ गद्दारी करने वाले ओवैसी जैसे लोग नागरिकता संशोधन कानून, एनपीए और एनआरसी का विरोध अपने सियासी रेटियां सेंकने के लिए कर रहे हैं। ऐसे में मोदी सरकार और भाजपा नेताओं की जिम्मेदारी तो बनती ही है कि वह उक्त कानूनों को लेकर लोगों की शंकाओं को दूर करे, इसके साथ-साथ जनता को अपने जनप्रतिधियों पर भी दबाव बनाना चाहिए कि वह पार्टी हित से ऊपर उठकर इसका समर्थन करें। अगर कुछ लोगों को खुश करने के लिए हमारे जनप्रतिनिधि मौन साधे रहेंगे तो उन्हें देश और जनता कभी माफ नहीं करेगी।

ऐसे नेता जो सियासी नफा-नुकसान के चलते अपनी अंतरात्मा की आवाज नहीं सुन रहे हैं, उनके लिए मध्य प्रदेश के पठारिया विधानसभा क्षेत्र से बसपा विधायक रामाबाई परिहार सबसे सटीक उदाहरण हैं, जिन्होंने पार्टी लाइन से ऊपर उठ देशहित की बात सोची और सीएए, एनपीआर और एनआरसी का समर्थन किया जिसके चलते बसपा सुप्रीमो ने उन्हें बाहर का रास्ता भी दिखा दिया। बीएसपी सुप्रीमो मायावती ने ट्वीट करते हुए कहा- “पठारिया से बीएसपी विधायक रामाबाई परिहार को नागरिकता कानून का समर्थन करने के चलते पार्टी से निलंबित किया गया है। उनके पार्टी के किसी भी कार्यक्रम में शामिल होने पर रोक लगाई गई है।” जन प्रतिनिधियों को समझना चाहिए कि कुछ खास मौकों पर चुप रहने वालों को इतिहास कभी माफ नहीं करता है।



# समस्याएं सुलझाने जम्मू-कश्मीर गये केंद्रीय मंत्रियों ने लोगों का दिल भी जीता



हर मंत्री के कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय जनता ने भाग लिया और केंद्र सरकार की इस पहल की सराहना करते हुए उम्मीद जताई कि जल्द ही हालात और बेहतर होंगे। जम्मू-कश्मीर के लिए यह बड़ी राहत भरी बात है कि मोदी सरकार ने 80 हजार करोड़ रुपए के पैकेज का ऐलान किया है।

जम्मू-कश्मीर के लोगों का दिल जीतने के मिशन पर निकले मोदी सरकार के 36 मंत्रियों ने राज्य के विभिन्न हिस्सों में जाकर आम लोगों की परेशानियों को समझा और उनके मन की बात जानी। यही नहीं कई केंद्रीय योजनाओं के लाभों से भी लोगों को अवगत कराया। देखा जाये तो आजाद भारत में ऐसा पहली बार हुआ जब इतनी बड़ी संख्या में केंद्र के मंत्रियों ने किसी राज्य खासकर जम्मू-कश्मीर का दौरा किया हो और लोगों की समस्याओं का समाधान करने उनके द्वार तक पहुँचे हों। केंद्र सरकार के आउटरीच कार्यक्रम के तहत जम्मू-कश्मीर के विभिन्न ब्लॉकों में केंद्रीय मंत्रियों के कार्यक्रम आयोजित किये गये। निर्धारित कार्यक्रमों के अलावा भी केंद्रीय मंत्रियों ने लोगों से मिलने के लिए कभी चाय की दुकान तो कभी पटरी बाजार आदि का दौरा किया।

केंद्रीय कानून, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद ने बारामूला जिले का दौरा किया और कई विकास योजनाओं का उद्घाटन किया। जिस बारामूला को कभी आतंकवादियों का गढ़ कहा जाता था वहां 370 हटने के बाद से पूरी तरह शांति है और रविशंकर प्रसाद ने इसी बारामूला जिले के बाजार का पैदल दौरा किया और लोगों से बातचीत कर उनके मुद्दों को समझा। रविशंकर प्रसाद ने बारामूला में इंडोर स्टेडियम का उद्घाटन किया जिसमें बास्केटबॉल, वालीबॉल, बैडमिंटन और योग आदि खेलों की सुविधाएं मौजूद हैं। साथ ही उन्होंने खेल स्टेडियम में मिनी पेवेलियन ब्लॉक की नींव भी रखी।

रविशंकर प्रसाद ने हाल ही में 10वीं और 12वीं कक्षा में शानदार प्रदर्शन करने वाली छह छात्राओं को पुरस्कार स्वरूप लैपटॉप भी दिये और केंद्र सरकार की विवाह सहायता योजना के तहत 40-40 हजार रुपये के चेक कई लाभार्थियों को वितरित किये और अधिकारियों के साथ बैठक कर सुरक्षा की स्थिति और विकास परियोजनाओं संबंधी कार्यों की समीक्षा की। केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने बीएसएनएल लैंडलाइन ग्राहकों के लिए वॉयस प्लान भी लांच किया। इस प्लान के तहत ग्राहक 1099 रुपए में साल भर तक अनलिमिटेड कॉल की सुविधा पा सकेंगे। इसके अलावा उन्होंने 40 सीटों की क्षमता वाले आईटी लैब का शुभारम्भ करने के अलावा लड़कों और लड़कियों के लिए दो अलग-अलग हॉस्टल का उद्घाटन किया। संचार मंत्री रविशंकर प्रसाद श्रीनगर के जीपीओ भी पहुँचे और उन्होंने महिला पोस्ट ऑफिस और पार्सल हब का उद्घाटन करते हुए कहा कि आयकर अपील की न्यायाधिकरण भी जल्द ही कश्मीर में स्थापित किया जाएगा। मंत्री ने यह भी ऐलान किया कि शीघ्र ही जम्मू-कश्मीर के 350 अधिवक्ता नोटरी बन जाएंगे। सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद ने बारामूला के 38 पंचायत क्षेत्रों के लिए भारतनेट सुविधा का ई-उद्घाटन करने के अलावा कुछ ब्लॉक विकास परिषदों के चेयरमैन और पंच-सरपंचों के साथ वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से बैठक भी की और लगभग 18 प्रतिनिधिमंडलों के साथ बैठक कर उन्होंने उनकी मांगें सुनीं और समस्याओं को समझा।

दूसरी ओर केंद्रीय गृह राज्यमंत्री जी किशन रेड्डी ने मध्य कश्मीर के गांदरबल का दौरा किया और आम लोगों से मुलाकात करने के अलावा पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज में एक समारोह की अध्यक्षता भी की। उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर में शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने व आतंकवाद को कुचलने में पुलिस की अहम भूमिका है। देश की एकता, अखंडता की खातिर जम्मू कश्मीर पुलिस ने जो बलिदान दिया, वैसा शायद ही दुनिया के किसी अन्य कोने में किसी पुलिस संगठन ने दिया हो। रेड्डी ने क्षेत्र में 20 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का उद्घाटन किया और दुधरामा बाईपास की नींव रखी। उन्होंने लोगों को आश्वासन दिया कि विकास, शांति और आर्थिक बेहतरि जल्द ही जम्मू और कश्मीर में लोगों को किस्मत बदलेगी।

कश्मीर में भेजे गये एक और केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय ने लोगों से बातचीत के दौरान कहा कि राज्य का विकास केंद्र सरकार के लिए प्राथमिकता है। उन्होंने बड़गाम का दौरा कर वहां कई परियोजनाओं का उद्घाटन किया। नित्यानंद राय ने बड़गाम में मनरेगा संबंधी कार्यों की नींव रखी। लड़कियों के हॉस्टल और डॉक्टरों के हॉस्टल का उद्घाटन भी किया। गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय ने शेखपोरा बड़गाम में एक बड़ी सार्वजनिक सभा को भी संबोधित किया और कहा कि स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नये रास्ते खोलने के लिए नए नीतियों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। नित्यानंद राय ने लोकतंत्र को देश की ताकत करार देते हुए

कहा कि यह सभी नागरिकों की जिम्मेदारी है कि वह लोकतंत्र को मजबूत करने में योगदान दें। इस आउटरीच कार्यक्रम के तहत नित्यानंद राय ने बीडीसी अध्यक्षों सहित विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों के साथ मुलाकात की।

केंद्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी भी श्रीनगर पहुँचे और केंद्र सरकार की उपलब्धियों व योजनाओं को जनता के समक्ष रखा। नकवी ने खासतौर पर जम्मू-कश्मीर के लिए सरकार द्वारा दी गई आर्थिक सुविधाओं के बारे में लोगों को रूबरू कराया। नकवी ने संपर्क कार्यक्रम के दौरान ही श्रीनगर के बाहर दारा क्षेत्र में एक हाई स्कूल की नींव रखी। नकवी ने शहर में हरवन इलाके के सरबंद में जल संरक्षण परियोजना की आधारशिला भी रखी। संपर्क कार्यक्रम के दौरान आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए नकवी ने कहा कि हिमायत कार्यक्रम के तहत प्रदेश को 16 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। साथ ही 12,000 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है। नकवी ने लोगों को यह भी बताया कि सांबा और अवंतीपोरा में एम्स स्थापित किया जा रहा है। नकवी के साथ संवाद करने के लिए बड़ी संख्या में कश्मीरी लोग जुटे थे और सभी के अंदर नया उत्साह और आंखों में नये सपने थे। नकवी ने श्रीनगर के ऐतिहासिक लाल चौक का दौरा किया और वहां के स्थानीय दुकानदारों और आम जनता से मुलाकात कर उनकी समस्याओं को भी सुना।

इस सप्ताह चूँकि खराब मौसम से कश्मीर घाटी विशेष रूप से प्रभावित रही इसीलिए मंत्रियों के कार्यक्रमों में कुछ बाधाएँ भी आईं लेकिन सरकार का जज्बा ऐसा था कि मौसम ज्यादा बाधा नहीं पैदा कर पाया। मंत्रियों ने जहां राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर लोगों की समस्याएं सुनीं वहीं अनुच्छेद हटने के बाद विकास की तेज हुई मुहिम और केंद्र सरकार की विभिन्न लाभकारी योजनाओं से भी उन्हें अवगत कराया।

18 जनवरी से शुरू हुई इस मुहिम के तहत केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल सांबा और कटुआ, डॉ. जितेंद्र सिंह जम्मू और उधमपुर, अश्विनी कुमार चौबे सांबा, डॉ. महेंद्र नाथ पाण्डेय जम्मू, स्मृति ईरानी रियासी में, वी. मुरलीधरन कटुआ, अनुराग सिंह ठाकुर जम्मू, पीयूष गोयल जम्मू, राज कुमार सिंह डोडा, प्रताप सारंगी कटुआ, वीके सिंह उधमपुर, अर्जुन मुंडा रियासी, सुश्री देबाश्री चौधरी जम्मू, किरण रिजजू जम्मू, कैलाश चौधरी सांबा, गजेन्द्र सिंह शेखावत कटुआ, हरदीप सिंह पुरी राजौरी, संतोष कुमार गंगवार रामबन, मुख्तार अब्बास नकवी श्रीनगर, नित्यानंद राय श्रीनगर, प्रहलाद सिंह पटेल उधमपुर, पुरुषोत्तम रूपाला जम्मू, जी. किशन रेड्डी गांदरबल, सोम प्रकाश जम्मू, थावर चंद गहलोत पुंछ, धोत्रे संजय शामराव राजौरी और दानवे राव साहब दादाराव ने राजौरी का दौरा कर लोगों का हाल जाना और समस्याओं को सुलझाने की पहल की। खास बात यह रही कि हर मंत्री के कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय जनता ने भाग लिया और केंद्र सरकार की इस पहल की सराहना करते हुए उम्मीद जताई कि जल्द ही हालात और बेहतर होंगे।

बहरहाल, जम्मू-कश्मीर के लिए यह बड़ी राहत भरी बात है कि मोदी सरकार ने जम्मू और कश्मीर के लिए 80 हजार करोड़ रुपए के भारी भरकम पैकेज का ऐलान किया है। सरकार ने कश्मीर में विकास से संबंधित कार्य के लिए इस पैकेज को मंजूरी दी है, निश्चित ही इस पैकेज का सही से उपयोग हो तो जम्मू-कश्मीर की किस्मत बदल सकती है।

केंद्रीय कानून, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद ने बारामूला जिले का दौरा किया और कई विकास योजनाओं का उद्घाटन किया। जिस बारामूला को कभी आतंकवादियों का गढ़ कहा जाता था वहां 370 हटने के बाद से पूरी तरह शांति है और रविशंकर प्रसाद ने इसी बारामूला जिले के बाजार का पैदल दौरा किया और लोगों से बातचीत कर उनके मुद्दों को समझा। रविशंकर प्रसाद ने बारामूला में इंडोर स्टेडियम का उद्घाटन किया जिसमें बास्केटबॉल, वालीबॉल, बैडमिंटन और योग आदि खेलों की सुविधाएं मौजूद हैं। साथ ही उन्होंने खेल स्टेडियम में मिनी पेवेलियन ब्लॉक की नींव भी रखी।



आज यह तय होना आवश्यक है कि विकसित देशों द्वारा विलासिता सज्जंभी आवश्यकताओं हेतु प्रकृति के संसाधनों का कितना उपयोग किया जाय एवं विकासशील देशों द्वारा मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का कितना उपयोग किया जाय। विश्व में सभी देश आज प्रकृति से केवल ले ही रहे हैं एवं प्रकृति को कुछ भी लौटा नहीं पा रहे हैं। इस प्रकार केवल खर्च करते रहेंगे तो कुबेर का खज़ाना भी ख़ाली हो जाएगा। अतः अब यह सोचने का समय आ गया है कि प्राकृतिक संसाधनों का कितना दोहन किया जाय ताकि धरोहर बनी रहे आने वाली पीढ़ी के लिए हम प्राकृतिक संसाधनों को छोड़ कर जाएँ। जिन देशों ने प्रकृति से अधिकतम लिया है, अब जब वापिस करने की जिम्मेदारी आई है तो वे देश पीछे हट रहे हैं। जबकि इस असंतुलन को ठीक करना ज़रूरी है।

# देश के आर्थिक विकास में पर्यावरण का भी रखना होगा ध्यान

आर्थिक विकास तो पर्यावरण के सहारे ही हो सकता है ज्योंकि जो भी चीज़ कल कारख़ानों में बनती है वह पर्यावरण से लिए गए तत्वों से ही बनती है। अतः ये तो हमारे खुद के हित में ही है कि हम खुद पर्यावरण की रक्षा करें और इसका दोहन समझ बूझकर करें।



किसी भी देश में आर्थिक विकास और पर्यावरण में द्वन्द काफ़ी लम्बे समय से चला आ रहा है। तेज़ गति से हो रहे आर्थिक विकास से पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव अक्सर देखा गया है। विश्व में हो रहे जलवायु परिवर्तन के पीछे भी कुछ देशों द्वारा अंधाधुंध रूप से किए जा रहे आर्थिक विकास को जिम्मेदार माना जा रहा है। अतः आज विश्व में यह मंथन चल रहा है कि पर्यावरण को नुकसान पहुँचाये बिना किस प्रकार देश में सतत आर्थिक विकास किया जाय और इसके लिए कैसे विश्व के सभी देशों को एक मंच पर लाया जाय। दरअसल आज जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी, आर्थिक असमानता एवं भूख आदि समस्याएँ सभी देशों के सामने विकराल रूप धारण करती जा रही हैं।

इन सभी गम्भीर समस्याओं का समाधान भी केवल सतत आर्थिक विकास से ही सम्भव है। लेकिन यह सतत आर्थिक विकास पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना किस प्रकार हो आज सभी देशों के सामने यह एक यक्ष प्रश्न के रूप में मुँह बाए खड़ा है। विकास और पर्यावरण एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। बिना पर्यावरण के बारे में सोचे विकास की बात सोची भी नहीं जा सकती। अगर पर्यावरण को नज़र अंदाज़ कर भी देंगे तो इतना तो तय है कि आखिर में विकास भी इससे प्रभावित होगा। असल में सवाल यही है कि पर्यावरण और विकास के बीच कैसे संतुलन साधा जाय। ऐसा कौन सा तरीका है जिससे विकास की गति में भी कोई रुकावट पैदा न हो और पर्यावरण को भी कोई नुकसान न हो।

आर्थिक विकास तो पर्यावरण के सहारे ही हो सकता है क्योंकि जो भी चीज़ कल कारख़ानों में बनती है वह पर्यावरण से लिए गए तत्वों से ही बनती है। अतः ये तो हमारे खुद के हित में ही है कि हम खुद पर्यावरण की रक्षा करें और इसका दोहन समझ बूझकर करें। पर्यावरण और आर्थिक विकास अलग

अलग नहीं किए जा सकते। अगर पर्यावरण स्वस्थ रहेगा तो ही आर्थिक विकास आगे बढ़ाया जा सकेगा। और फिर ग़रीबी, भुखमरी कम करने सम्बंधी लक्ष्यों को भी प्राप्त किया जा सकता है। पर्यावरण को संरक्षित करते हुए हो रहा आर्थिक विकास मुनाफ़े वाला आर्थिक विकास होगा। पर्यावरण को बचाए रखने में यदि हम सफल होंगे तो उसे हमारी आगे आने वाली संतानों के लिए भी संसाधनो का उपयोग करने हेतु कुछ छोड़ जाएँगे और इसके कारण आगे आने वाली पीढ़ी भी, जैसा विकास वे चाहेंगे वैसा विकास कर पाने में सफल होंगे। अतः पर्यावरण और आर्थिक विकास में संतुलन आवश्यक है।

आज उद्योगों द्वारा फैलाए जा रहे कार्बन उत्सर्जन को न्यूनतम स्तर पर लाना आवश्यक है एवं इस मुद्दे को वैश्विक स्तर पर सभी देशों के बीच उठाना भी आवश्यक है। सभी देशों को मिलकर इस कार्य में योगदान देना होगा। भारत भी जीवाश्म ईंधन के उपयोग को कम से कम करने हेतु प्रयास कर रहा है। गैर-जीवाश्म ईंधन ऊर्जा के स्रोतों को अधिक से अधिक उपयोग करने हेतु गम्भीर प्रयास भारत में किए जा रहे हैं। जैसे सौर ऊर्जा के उपयोग पर भारत सरकार ध्यान दे रही है। कोयले का ईंधन के रूप में उपयोग कम से कम करने के प्रयास भी हो रहे हैं।

दरअसल विकसित एवं विकासशील देशों के बीच आपस के हितों में टकराव है। वर्ष 2000 में सहस्राब्दी विकास लक्ष्य एवं वर्ष 2015 में सतत विकास लक्ष्य निर्धारित किए गए थे जिन्हें वर्ष 2030 तक विश्व के सभी देशों को प्राप्त करना है। इस हेतु भी विशेष रूप से विकसित देशों के प्रयासों में कमी देखने में आ रही है। विलासिता और मूलभूत दोनों ही आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्यावरण का उपयोग किया जा रहा है। आज यह तय होना आवश्यक है कि विकसित देशों द्वारा विलासिता सम्बंधी आवश्यकताओं हेतु प्रकृति

के संसाधनों का कितना उपयोग किया जाय एवं विकासशील देशों द्वारा मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्राकृतिक संसाधनों का कितना उपयोग किया जाय। विश्व में सभी देश आज प्रकृति से केवल ले ही रहे हैं एवं प्रकृति को कुछ भी लौटा नहीं पा रहे हैं। इस प्रकार केवल खर्च करते रहेंगे तो कुबेर का खज़ाना भी ख़ाली हो जाएगा। अतः अब यह सोचने का समय आ गया है कि प्राकृतिक संसाधनों का कितना दोहन किया जाय ताकि धरोहर बनी रहे आने वाली पीढ़ी के लिए हम प्राकृतिक संसाधनों को छोड़ कर जाएँ। जिन देशों ने प्रकृति से अधिकतम लिया है, अब जब वापिस करने की जिम्मेदारी आई है तो वे देश पीछे हट रहे हैं। जबकि इस असंतुलन को ठीक करना ज़रूरी है।

हालाँकि, यह पाया गया है कि कई देशों यथा चीन, भारत, दक्षिण पूर्वीय देशों एवं अफ़्रीका में जनसंख्या तेज़ी से बढ़ रही है। परंतु, फिर भी इन देशों में प्राकृतिक संसाधनों की प्रति व्यक्ति खपत कम है जबकि विकसित देशों में जनसंख्या भले कम है परंतु प्राकृतिक संसाधनों की प्रति व्यक्ति खपत बहुत अधिक है। इस स्थिति में सिद्धांततः विकसित देशों को पर्यावरण में सुधार हेतु ज़्यादा योगदान देना चाहिए एवं आगे आना चाहिए। जबकि वस्तु स्थिति यह है कि आज विकसित देश वर्तमान परिस्थिति में बदलाव करने को राज़ी नहीं हैं क्योंकि इनके यहाँ कल कारख़ानों में इस सम्बंध में किए जाने वाले तकनीकी बदलाव पर बहुत अधिक खर्चा होगा, जिसे ये देश वहाँ करने को तैयार नहीं हैं।

एक रास्ता यह भी है कि उपलब्ध संसाधनों का दक्षता पूर्वक उपयोग कर इसके दोहन को नियंत्रित किया जा सकता है। भारत में विशेष रूप से ऊर्जा के क्षेत्र में इस ओर ध्यान दिया जा रहा है। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भारत में काफ़ी काम किया जा रहा है। आर्थिक वृद्धि को नापने का नज़रिया भी बदलना चाहिए।

सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के बजाय सतत एवं स्थिर विकास को आर्थिक विकास का पैमाना बनाया जाना चाहिए ताकि प्राकृतिक संसाधनों के स्टॉक को बरकरार रखा जा सके। साथ ही, रीसाइक्लिंग उद्योग को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे रोज़गार के नए अवसर भी पैदा होंगे। किसी भी वस्तु की वैल्यू में वृद्धि की जा सकती है। संसाधनों एवं उत्पादों के कुशल उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। पूरे विश्व में उपज का एक तिहाई हिस्सा बर्बाद हो जाता है। भारत में भी अमूमन यही स्थिति है। इन फ़सलों को उगाने में बहुत सारे कार्बन का उत्सर्जन होता है, बहुत सारे पानी का उपयोग होता है, परिवहन का उपयोग होता है। परंतु कितनी आसानी से दावतों में खाद्य पदार्थों का सामान वेस्ट होता है। घरों में सब्ज़ी का बहुत वेस्ट होता है। लेकिन इन्हें उगाने में संसाधनों का भरपूर उपयोग होता है। जिसे मितव्ययता के मार्ग पर चलकर बचाया जा सकता है।

भारत में भूक्षय भी एक बड़ी समस्या है। इससे देश के सकल घरेलू उत्पाद में 2.5 प्रतिशत की कमी हो जाती है। इससे फ़सल के अंदर पौष्टिक तत्व भी नष्ट हो जाते हैं। ज़मीन का संरक्षण करना बहुत आसान है। घास उगाकर, पेड़ लगाकर, झाड़ियाँ उगाकर यह क्षरण रोका जा सकता है। उर्वरकों का इस्तेमाल ख़त्म करना आज की आवश्यकता है। उक्त छोटे छोटे उपाय करके भी पर्यावरण को बहुत बड़ी हद तक सुधारा जा सकता है।

भारत में नीति आयोग ने एक सतत विकास इंडेक्स तैयार किया है, जिसमें 17 बिंदु रखे गए हैं। इन 17 बिंदुओं पर निष्पादन के आधार पर समस्त राज्यों की प्रतिवर्ष रैंकिंग तय की जाती है। इससे देश के सभी राज्यों में पर्यावरण सुधार हेतु आपस में प्रतियोगिता की भावना पैदा होती है। नीति आयोग के इस प्रयोग से देश के राज्यों द्वारा पर्यावरण में सुधार हेतु कई नए नए प्रयोग किए जा रहे हैं।



(कहानी)

# मृतक-भोज



सेठ रामनाथ ने रोग-शय्या पर पड़े-पड़े निराशापूर्ण दृष्टि से अपनी स्त्री सुशीला की ओर देखकर कहा, मैं बड़ा अभाग्य हूँ, शीला। मेरे साथ तुम्हें सदैव ही दुख भोगना पड़ा। जब घर में कुछ न था, तो रात-दिन गृहस्थी के धन्धों और बच्चों के लिए मरती थीं। जब जरा कुछ सँभला और तुम्हारे आराम करने के दिन आये, तो यों छोड़े चला जा रहा हूँ। आज तक मुझे आशा थी, पर आज वह आशा टूट गयी। देखो शीला, रोओ मत। संसार में सभी मरते हैं, कोई दो साल आगे, कोई दो साल पीछे। अब गृहस्थी का भार तुम्हारे ऊपर है। मैंने रुपये नहीं छोड़े; लेकिन जो कुछ है, उससे तुम्हारा जीवन किसी तरह कट जायगा ... यह राजा क्यों रो रहा है ? सुशीला ने आँसू पोंछकर कहा, ज़िंदा हो गया है और क्या। आज सबरे से रट लगाये हुए हैं कि मैं मोटर लूँगा। 50 रु. से कम में आयेगी मोटर ? सेठजी को इधर कुछ दिनों से दोनों बालकों पर बहुत स्नेह हो गया था। बोले तो मैंगा दो न एक। बेचारा कब से रो रहा है, क्या-क्या अरमान दिल में थे। सब धूल में मिल गये। रानी के लिए विलायती गुड़िया भी मैंगा दो। दूसरों के खिलौने देखकर तरसती रहती है। जिस धन को प्राणों से भी प्रिय समझा, वह अन्त को डाक्टरों ने खाया। बच्चे मुझे क्या याद करेंगे कि बाप था। अभाग्य बाप ने तो धन को लड़के-लड़की से प्रिय समझा। कभी पैसे की चीज भी लाकर नहीं दी।

अन्तिम समय जब संसार की असारता कठोर सत्य बनकर आँखों के सामने खड़ी हो जाती है, तो जो कुछ न किया, उसका खेद और जो कुछ किया, उस पर पश्चात्ताप, मन को उदार और निष्कपट बना देता है। सुशीला ने राजा को बुलाया और उसे छाती से लगाकर रोने लगी। वह मातृस्नेह, जो पति की कृपणता से भीतर-ही-भीतर तड़पकर रह जाता था, इस समय जैसे खौल उठा। लेकिन मोटर के लिए रुपये कहाँ थे ? सेठजी ने पूछा, 'मोटर लोगे बेटा; अपनी अम्मा से रुपये लेकर भैया के साथ चले जाओ। खूब अच्छी मोटर लाना।'।

राजा ने माता के आँसू और पिता का यह स्नेह देखा, तो उसका बालहठ जैसे पिघल गया। बोला, 'अभी नहीं लूँगा।'

सेठजी ने पूछा, 'क्यों ?'

'जब आप अच्छे हो जायँगे तब लूँगा।' सेठजी फूट-फूटकर रोने लगे।

तीसरे दिन सेठ रामनाथ का देहान्त हो गया। धनी के जीने से दुःख बहुतों को होता है, सुख थोड़ों को। उनके मरने से दुःख थोड़ों को होता है, सुख बहुतों को। महाब्राह्मणों की मण्डली अलग सुखी है, पण्डितजी अलग खुश हैं, और शायद बिरादरी के लोग भी प्रसन्न हैं; इसलिए कि एक बराबर का आदमी कम हुआ। दिल से एक काँटा दूर हुआ। और पट्टीदारों का तो पूछना ही क्या। अब वह पुरानी कसर निकालेंगे। हृदय को शीतल करने का ऐसा अवसर बहुत दिनों के बाद मिला है। आज पाँचवाँ दिन है। वह विशाल भवन सूना पड़ा है। लड़के न रोते हैं, न हँसते हैं। मन मारे माँ के पास बैठे हैं और विधवा भविष्य की अपार चिन्ताओं के भार से दबी हुई निर्जीव-सी पड़ी है। घर में जो रुपये बच रहे थे, वे दाह-क्रिया की भेंट हो गये और अभी सारे संस्कार बाकी पड़े हैं। भगवान्, कैसे बेड़ा पार लगेगा।

किसी ने द्वार पर आवाज दी। महारा ने आकर सेठ धनीराम के आने की सूचना दी। दोनों बालक बाहर दौड़े। सुशीला का मन भी एक क्षण के लिए हरा हो गया। सेठ धनीराम बिरादरी के सरपंच थे। अबला का शुब्ध

हृदय सेठजी की इस कृपा से पुलकित हो उठा। आखिर बिरादरी के मुखिया हैं। ये लोग अनाथों की खोज-खबर न लें तो कौन ले। धन्य हैं ये पुण्यात्मा लोग जो मुसीबत में दीनों की रक्षा करते हैं। यह सोचती हुई सुशीला घूँघट निकाले बरोठे में आकर खड़ी हो गयी। देखा तो धनीरामजी के अतिरिक्त और भी कई सज्जन खड़े हैं।

धनीराम बोले 'बहूजी, भाई रामनाथ की अकाल-मृत्यु से हम लोगों को जितना दुःख हुआ है, वह हमारा दिल ही जानता है। अभी उनकी उम्र ही क्या थी; लेकिन भगवान् की इच्छा। अब तो हमारा यही धर्म है कि ईश्वर पर भरोसा रखें और आगे के लिए कोई राह निकालें। काम ऐसा करना चाहिए कि घर की आबरू भी बनी रहे और भाईजी की आत्मा संतुष्ट भी हो।

कुबेरदास ने सुशीला को कनखियों से देखते हुए कहा, 'मर्यादा बड़ी चीज है। उसकी रक्षा करना हमारा धर्म है। लेकिन कमली के बाहर पाँव निकालना भी तो उचित नहीं। कितने रुपये हैं तेरे पास, बहू ? क्या कहा, कुछ नहीं ?'

सुशीला - 'घर में रुपये कहाँ हैं, सेठजी। जो थोड़े-बहुत थे, वह बीमारी में उठ गये।'

धनीराम - 'तो यह नयी समस्या खड़ी हुई। ऐसी दशा में हमें क्या करना चाहिए, कुबेरदासजी ?'

कुबेरदास - 'जैसे हो, भोज तो करना ही पड़ेगा। हाँ, अपनी सामर्थ्य देखकर काम करना चाहिए। मैं कर्ज लेने को न कहूँगा। हाँ, घर में जितने रुपयों का प्रबन्ध हो सके, उसमें हमें कोई कसर न छोड़नी चाहिए। मृत-जीव के साथ भी तो हमारा कुछ कर्तव्य है। अब तो वह फिर कभी न आयेगा, उससे सदैव के लिए नाता टूट रहा है। इसलिए सबकुछ हैसियत के मुताबिक होना चाहिए। ब्राह्मणों को तो भोज देना ही पड़ेगा जिससे कि मर्यादा का निर्वाह हो !'

धनीराम - 'तो क्या तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है, बहूजी ? दो-चार हजार भी नहीं !'

सुशीला -- 'मैं आपसे सत्य कहती हूँ, मेरे पास कुछ नहीं है। ऐसे समय झूठ बोलूँगी।'

धनीराम ने कुबेरदास की ओर अर्ध-अविश्वास से देखकर कहा, 'तब तो यह मकान बेचना पड़ेगा।'

कुबेरदास - इसके सिवा और क्या हो सकता है। नाक काटना तो अच्छा नहीं। रामनाथ का कितना नाम था, बिरादरी के स्तंभ थे। यही इस समय एक उपाय है। 10 हजार रु. मेरे आते हैं। सूद-बट्टा लगाकर कोई 15 हजार रु. मेरे हो जायँगे। बाकी भोज में खर्च हो जायेगा। अगर कुछ बच रहा, तो बाल-बच्चों के काम आ जायगा।

धनीराम - आपके यहाँ कितने पर बंधक रखा था ?

कुबेरदास- 10 हजार रुपये पर। रुपये सैंकड़े सूद।

धनीराम - मैंने तो कुछ कम सुना है।

कुबेरदास - उसका तो रेहननामा रखा है। जबानी बातचीत थोड़े ही है। मैं दो-चार हजार के लिए झूठ नहीं बोलूँगा।

धनीराम-नहीं-नहीं, यह मैं कब कहता हूँ।

विधवा सुशीला अब और ज्यादा करती। पंचों से लड़कर वह कैसे रह सकती थी। पानी में रहकर मगर से कौन बैर कर सकता है। घर में जाने के लिए उठी पर वहीं मूर्छित होकर गिर पड़ी। अभी तक आशा सँभाले हुई थी। बच्चों के पालन-पोषण में वह अपना वैधव्य भूल सकती थी; पर अब तो अंधकार था, चारों ओर। सेठ रामनाथ के मित्रों का उनके घर पर पूरा अधिकार था। मित्रों का अधिकार न हो तो किसका हो। स्त्री कौन होती है। जब वह इतनी मोटी-सी बात नहीं समझती कि बिरादरी करना और धूम-धाम से दिल खोलकर करना लाजिमी बात है, तो उससे और कुछ कहना व्यर्थ है। गहने कौन खरीदे ? भीमचन्द चार हजार दाम लगा चुके थे, लेकिन अब उन्हें मालूम हुआ कि उनसे भूल हुई थी। दुर्बलदास ने तीन हजार लगाये थे। इसलिए सौदा इन्हीं के हाथ हुआ। इस बात पर दुर्बलदास और भीमचन्द में तकरार भी हो गयी; लेकिन भीमचन्द को मुँह की खानी पड़ी। न्याय दुर्बल के पक्ष में था। धनीराम ने कटाक्ष किया -देखो दुर्बलदास, माल तो ले जाते हो; पर तीन हजार से बेसी का है। मैं नीति की हत्या न होने दूँगा।

तो तूने सुन लिया, बाई ! पंचों की सलाह है कि मकान बेच दिया जाय।

सुशीला का छोटा भाई संतलाल भी इसी समय आ पहुँचा। यह अन्तिम वाक्य उसके कान में पड़ गया। बोल उठा, -किसलिए मकान बेच दिया जाय ? बिरादरी के भोज के लिए ? बिरादरी तो खा-पीकर राह लेगी, इन अनाथों की रक्षा कैसे होगी ? इनके भविष्य के लिए भी तो कुछ सोचना चाहिए।

धनीराम ने कोप-भरी आँखों से देखकर कहा, -आपको इन मामलों में टाँग अड़ाने का कोई अधिकार नहीं। केवल भविष्य की चिन्ता करने से काम नहीं चलता। मृतक का पीछा भी किसी तरह सुधरना ही पड़ता है। आपका क्या बिगड़ेगा। हँसी तो हमारी होगी। संसार में मर्यादा से प्रिय कोई वस्तु नहीं ! मर्यादा के लिए प्राण तक दे देते हैं। जब मर्यादा ही न रही, तो क्या रहा। अगर हमारी सलाह पूछोगे, तो हम यही कहेंगे। आगे बाई का अखतियार है, जैसा चाहे करे; पर हमसे कोई सरोकार न रहेगा। चलिए कुबेरदासजी, चलें।

सुशीला ने भयभीत होकर कहा, -भैया की बातों का विचार न कीजिए, इनकी तो यह आदत है। मैंने तो आपकी बात नहीं टाली; आप मेरे बड़े हैं। घर का हाल आपको मालूम है। मैं अपने स्वामी की आत्मा को दुखी करना नहीं चाहती, लेकिन जब उनके बच्चे ठोकरें खायेंगे, तो क्या उनकी आत्मा दुखी न होगी ? बेटा का ब्याह करना ही है। लड़के को पढ़ाना-लिखाना है ही। ब्राह्मणों को खिला दीजिए; लेकिन बिरादरी करने की मुझमें सामर्थ नहीं है।

दोनों महानुभावों को जैसे थपड़ लगी इतना बड़ा अधर्म। भला ऐसी बात भी जबान से निकाली जाती है। पंच लोग अपने मुँह में कालिख न लगने देंगे। दुनिया विधवा को न हँसेगी, हँसी होगी पंचों की। यह जग-हँसाई वे कैसे सह सकते हैं। ऐसे घर के द्वार पर झाँकना भी पाप है। सुशीला रोकर बोली, %मैं अनाथ हूँ, नादान हूँ, मुझ पर क्रोध न कीजिए। आप लोग ही मुझे छोड़ देंगे, तो मेरा कैसे निर्वाह होगा।

इतने में दो महाशय और आ बिराजे। एक बहुत मोटे और दूसरे बहुत दुबले। नाम भी गुणों के अनुसार ही भीमचन्द और दुर्बलदास। धनीराम ने संक्षेप में यह परिस्थिति उन्हें समझा दी। दुर्बलदास ने सहृदयता से कहा, -तो ऐसा क्यों नहीं करते कि हम लोग मिलकर कुछ रुपये दे दें। जब इसका लड़का सयाना हो जायगा, तो रुपये मिल ही जायेंगे। अगर न भी मिले तो एक मित्र के लिए कुछ बल खा जाना कोई बड़ी बात नहीं।

संतलाल ने प्रसन्न होकर कहा, -इतनी दया आप करेंगे, तो क्या पूछना।

कुबेरदास त्योरी चढ़ाकर बोले, -तुम तो बेसिर-पैर की बातें करने लगे दुर्बलदासजी ! इस बखत के बाजार में किसके पास फालतू रुपये रखे हुए हैं।

भीमचन्द- सो तो ठीक है, बाजार की ऐसी मंदी तो कभी देखी नहीं;पर निबाह तो करना चाहिए।

कुबेरदास अकड़ गये। वह सुशीला के मकान पर दाँत लगाये हुए थे। ऐसी बातों से उनके स्वार्थ में बाधा पड़ती थी। वह अपने रुपये अब वसूल करके छोड़ेंगे। भीमचन्द ने उन्हें किसी तरह सचेत किया; -लेकिन भोज तो देना ही पड़ेगा। उस कर्तव्य का पालन न करना समाज की नाक काटना है।

सुशीला ने दुर्बलदास में सहृदयता का आभास देखा। उनकी ओर दीन नेत्रों से देखकर बोली, मैं आप लोगों से बाहर थोड़े ही हूँ। आप



लोग मालिक हैं, जैसा उचित समझें वैसा करें।

दुर्बलदास – तेरे पास कुछ थोड़े-बहुत गहने तो होंगे, बाई ?

हाँ गहने हैं। आधे तो बीमारी में बिक गये, आधे बचे हैं। सुशीला ने सारे गहने लाकर पंचों के सामने रख दिये; –पर यह तो मुश्किल से तीन हजार में उठेंगे। दुर्बलदास ने पोटली को हाथ में तौलकर कहा, –तीन हजार को कैसे जायँगे। मैं साढ़े तीन हजार दिला दूँगा।

भीमचन्द ने फिर पोटली को तौलकर कहा, –मेरी बोली, चार हजार की है।

कुबेरदास को मकान की बिक्री का प्रश्न छेड़ने का अवसर फिर मिला, –चार हजार ही में क्या हुआ जाता है। बिरादरी का भोज है या दोष मिटाना है। बिरादरी में कम-से-कम दस हजार का खरचा है। मकान तो निकालना ही पड़ेगा।

सन्तलाल ने ओंठ चबाकर कहा, –मैं कहता हूँ, आप लोग क्या इतने निर्दयी हैं ! आप लोगों को अनाथ बालकों पर भी दया नहीं आती ! क्या उन्हें रास्ते का भिखारी बनाकर छोड़ेंगे ? लेकिन सन्तलाल की फरियाद पर किसी ने ध्यान न दिया। मकान की बातचीत अब नहीं टाली जा सकती थी। बाजार मंदा है। 30 हजार से बेसी नहीं मिल सकते, 15 हजार तो कुबेरदास के हैं। पाँच हजार बचेंगे। चार हजार गहनों से आ जायँगे। इस तरह 9 हजार में बड़ी किफायत से ब्रह्मभोज और बिरादरी-भोज दोनों निपटा दिये जायँगे। सुशीला ने दोनों बालकों को सामने करके करबद्ध होकर कहा, –पंचो, मेरे बच्चों का मुँह देखिए। मेरे घर में जो कुछ है; वह आप सब ले लीजिए; लेकिन मकान छोड़ दीजिए मुझे कहीं ठिकाना न मिलेगा। मैं आपके पैरों पड़ती हूँ मकान इस समय न बेचें।

इस मूर्खता का क्या जवाब दिया जाय। पंच लोग तो खुद चाहते थे कि मकान न बेचना पड़े। उन्हें अनाथों से कोई दुश्मनी नहीं थी; किन्तु बिरादरी का भोज और किस तरह किया जाय। अगर विधवा कम-से-कम पाँच हजार रु. का जोगाड़ और कर दे, तो मकान बच सकता है, पर वह ऐसा नहीं कर सकती, तो मकान बेचने के सिवा और कोई उपाय नहीं।

कुबेर ने अन्त में कहा, –देख बाई, बाजार की दशा इस समय खराब है। रुपये किसी से उधार नहीं मिल सकते। बाल-बच्चों के भाग में लिखा होगा, तो भगवान् और किसी हीले से देगा। हीले रोजी, बहाने मौत। बाल-बच्चों की चिंता मत कर। भगवान् जिसको जन्म देते हैं, उसकी जीविका की जुगत पहले ही से कर देते हैं। हम तुझे समझाकर हार गये। अगर तू अब भी अपना हठ न छोड़ेगी, तो हम बात भी न पूछेंगे। फिर यहाँ तेरा रहना मुश्किल हो जायगा। शहरवाले तेरे पीछे पड़ जायँगे।

विधवा सुशीला अब और क्या करती। पंचों से लड़कर वह कैसे रह सकती थी। पानी में रहकर मगर से कौन बैर कर सकता है। घर में जाने के लिए उठी पर वहीं मूर्छित होकर गिर पड़ी। अभी तक आशा सँभाले हुई थी। बच्चों के पालन-पोषण में वह अपना वैधव्य भूल सकती थी; पर अब तो अंधकार था, चारों ओर। सेठ रामनाथ के मित्रों का उनके घर पर पूरा अधिकार था। मित्रों का अधिकार न हो तो किसका हो। स्त्री कौन होती है। जब वह इतनी मोटी-सी बात नहीं समझती कि बिरादरी करना और धूम-धाम से दिल खोलकर करना लाजिमी बात है, तो उससे और कुछ कहना व्यर्थ है। गहने कौन खरीदे ? भीमचन्द चार हजार दाम लगा चुके थे, लेकिन अब उन्हें मालूम हुआ कि उनसे भूल हुई थी। दुर्बलदास ने तीन हजार लगाये थे।

इसलिए सौदा इन्हीं के हाथ हुआ। इस बात पर दुर्बलदास और भीमचन्द में तकरार भी हो गयी; लेकिन भीमचन्द को मुँह की खानी पड़ी। न्याय दुर्बल के पक्ष में था। धनीराम ने कटाक्ष किया –देखो दुर्बलदास, माल तो ले जाते हो; पर तीन हजार से बेसी का है। मैं नीति की हत्या न होने दूँगा।

कुबेरदास बोले, –अजी, तो घर में ही तो है, कहीं बाहर तो नहीं गया। एक दिन मित्रों की दावत हो जायगी !

इस पर चारों महानुभाव हँसे। इस काम से फुरसत पाकर अब मकान का प्रश्न उठा। कुबेरदास 30 हजार देने पर तैयार थे; पर कानूनी कार्रवाई किये बिना संदेह की गुंजाइश थी। यह गुंजाइश क्योंकर रखी जाय। एक दलाल बुलाया गया। नाटा-सा आदमी था, पोपला मुँह, कोई 50 की अवस्था। नाम था चोखेलाल।

कुबेरदास ने कहा, –चोखेलालजी से हमारी तीस साल की दोस्ती है। आदमी क्या रत्न हैं।

भीमचन्द-देखो चोखेलाल, हमें यह मकान बेचना है। इसके लिए कोई अच्छा ग्राहक लाओ। तुम्हारी दलाली पक्की।

कुबेरदास-बाजार का हाल अच्छा नहीं है; लेकिन फिर भी हमें यह तो देखना पड़ेगा कि रामनाथ के बाल-बच्चों को टोटा न हो। (कान में) तीस से आगे न जाना।

भीमचन्द – द े ि ख ए कुबेरदास, यह अच्छी बात नहीं है।

कुबेरदास – तो मैं क्या कर रहा हूँ। मैं तो यही कह रहा था कि अच्छे द ा म लगवाना।

चोखेलाल –आप लोगों को मुझसे यह कहने की जरूरत नहीं। मैं अपना धर्म समझता हूँ, रामनाथजी मेरे भी मित्र थे। मुझे यह भी मालूम है कि इस मकान के बनवाने में एक लाख से कम एक पाई भी नहीं लगे, लेकिन बाजार का हाल क्या आप लोगों से छिपा है। इस समय इसके 25 हजार से बेसी नहीं मिल सकते। सुभीते से तो कोई ग्राहक से दस-पाँच हजार और मिल जायँगे; लेकिन इस समय तो कोई ग्राहक भी मुश्किल से मिलेंगे। लो दही और लाव दही की बात है।

धनीराम –25 हजार रु. तो बहुत कम है भाई, और न सही 30 हजार रु. तो करा दो।

चोखेलाल – 30 क्या मैं तो 40 करा दूँ, पर कोई ग्राहक तो मिले। आप लोग कहते हैं तो मैं 30 हजार रु. की बातचीत करूँगा।

धनीराम –जब तीस हजार में ही देना है तो कुबेरदासजी ही क्यों न ले लें। इतना सस्ता माल दूसरों को क्यों दिया जाय।

कुबेरदास – आप सब लोगों की राय हो, तो ऐसा ही कर लिया जाय। धनीराम ने –हाँ, हाँ कहकर हामी भरी। भीमचन्द मन में ऐंठकर रह गये। यह सौदा भी पक्का हो गया। आज ही वकील ने बैनामा लिखा। तुरन्त रजिस्ट्री

## सेन्सर टाइम्स

भी हो गयी। सुशीला के सामने बैनामा लाया गया, तो उसने एक ठण्डी साँस ली और सजल नेत्रों से उस पर हस्ताक्षर कर दिये। अब उसे उसके सिवा और कहीं शरण नहीं है। बेवफा मित्र की भाँति यह घर भी सुख के दिनों में साथ देकर दुःख के दिनों में उसका साथ छोड़ रहा है।

पंच लोग सुशीला के आँगन में बैठे बिरादरी के रुक़े लिख रहे हैं और अनाथ विधवा ऊपर झरोखे पर बैठी भाग्य को रो रही है। इधर रुक्का तैयार हुआ, उधर विधवा की आँखों से आँसू की बूँदें निकलकर रुक़े पर गिर पड़ीं। धनीराम ने ऊपर देखकर कहा, –पानी का छींटा कहाँ से आया ?

सन्तलाल-बाई बैठी रो रही है। उसने रुक़े पर अपने रक्त के आँसुओं की मुहर लगा दी है।

धनीराम (ऊँचे स्वर में) –अरे, तो तू रो क्यों रही है, बाई ? यह रोने का समय नहीं है, तुझे तो प्रसन्न होना चाहिए कि पंच लोग तेरे घर में आज यह शुभ-कार्य करने के लिए जमा हैं। जिस पति के साथ तूने इतने दिनों भोग-विलास किया, उसी का पीछा सुधरने में तू दुःख मानती है ?

बिरादरी में रुक्का फिरा। इधर तीन-चार दिन पंचों ने भोज की तैयारियों में बिताये। घी धनीरामजी की आढ़त से आया। मैदा, चीनी

क्या बात है ! आपने रामनाथजी का नाम रख लिया। बिरादरी यही खाना-खिलाना देखती है। रोकड़ देखने नहीं जाती।

मेहमान लोग बखान-बखान कर माल उड़ा रहे थे और उधर कोठरी में बैठी हुई सुशीला सोच रही थी संसार में ऐसे स्वार्थी लोग हैं ! सारा संसार स्वार्थमय हो गया है ! सब पेटों पर हाथ फेर-फेर कर भोजन कर रहे हैं।

कोई इतना भी नहीं पूछता कि अनाथों के लिए कुछ बचा या नहीं। एक महीना गुजर गया। सुशीला को एक-एक पैसे की तंगी हो रही थी। नकद था ही नहीं, गहने निकल ही गये थे। अब थोड़े से बरतन बच रहे थे। उधर छोटे-छोटे बहुत-से बिल चुकाने थे। कुछ रुपये डाक्टर के, कुछ दरजी के, कुछ बनियों के। सुशीला को यह रकमें घर का बचा-खुचा सामान बेचकर चुकानी पड़ीं। और महीना पूरा होते-होते उसके पास कुछ न बचा। बेचारा सन्तलाल एक दूकान पर मुनीम था। कभी-कभी वह आकर एक-आधा रुपये दे देता। इधर खर्च का हाथ फैला हुआ था। लड़के अवस्था को समझते थे। माँ को छेड़ते न थे, पर मकान के सामने से कोई खोंचेवाला निकल जाता और वे दूसरे लड़कों को फल या मिठाई खाते देखते, तो उनके मुँह में पानी भरकर आँखों में भर जाता था। ऐसी ललचायी हुई आँखों से ताकते थे कि दया आती। वही बच्चे, जो थोड़े दिन पहले मेवे-

रोटी-सैंककर दे दी। दही से खाने लगा। आम लड़कों की भाँति वह भी स्वार्थी था। बहन से पूछा भी नहीं। सुशीला ने कड़ी आँखों से देखकर कहा, –बहन को भी दे दे। अकेला ही खा जायगा।

मोहन लज्जित हो गया। उसकी आँखें डबडबा आयीं। रेवती बोली, –नहीं अम्माँ, कितना मिला ही है। तुम खाओ मोहन, तुम्हें जल्दी नींद आ जाती है। मैं तो दाल पक जायगी तो खाऊँगी।

उसी वक्त दो आदमियों ने आवाज दी। रेवती ने बाहर जाकर पूछा, यह सेठ कुबेरदास के आदमी थे। मकान खाली कराने आये थे। क्रोध से सुशीला की आँखें लाल हो गयीं। बरोठे में आकर कहा, –अभी मेरे पति को पीछे हुए महीना भी नहीं हुआ, मकान खाली कराने की धुन सवार हो गयी। मेरा 50 हजार का घर 30 हजार में ले लिया, पाँच हजार सूद के उड़ाये, फिर भी तस्कीन नहीं होती। कह दो, मैं अभी खाली नहीं करूँगी।

मुनीम ने नम्रता से कहा, –बाई जी, मेरा क्या अख्तियार है। मैं तो केवल संदेसिया हूँ। जब चीज दूसरे की हो गयी, तो आपको छोड़नी ही पड़ेगी। झंझट करने से क्या मतलब।

सुशीला भी समझ गयी, ठीक ही कहता है। गाय हत्या के बल कै दिन खेत चरेगी। नर्म होकर बोली, सेठजी से कहो, मुझे दस-पाँच दिन की मुहलत दें। लेकिन नहीं, कुछ मत कहो। क्यों दस-पाँच दिन के लिए किसी का एहसान लूँ। मेरे भाग्य में इस घर में रहना लिखा होता, तो निकलता ही क्यों।

मुनीम ने पूछा, –तो कल सबेरे तक खाली हो जायगा ?

सुशीला- हाँ, हाँ, कहती तो हूँ; लेकिन सबेरे तक क्यों, मैं अभी खाली किये देती हूँ। मेरे पास कौन-सा बड़ा सामान ही है। तुम्हारे सेठजी का रात-भर का किराया मारा जायगा। जाकर ताला-वाला लाओ या लाये हो ?

मुनीम – ऐसी क्या जल्दी है, बाई। कल सावधानी से खाली कर दीजिएगा।

सुशीला-क़ल का झगड़ा क्या रखूँ। मुनीमजी, आप जाइए, ताला लाकर डाल दीजिए। यह कहती हुई सुशीला अन्दर गयी, बच्चों को भोजन कराया, एक रोटी आप किसी तरह निगली, बरतन धोये, फिर एक एक्का मँगवाकर उस पर अपना मुख़्तर सामान लादा और भारी हृदय से उस घर से हमेशा के लिए विदा हो गयी।

जिस वक्त यह घर बनवाया था, मन में कितनी उमंगें थीं। इसके प्रवेश में कई हजार ब्राह्मणों का भोज हुआ था। सुशीला को इतनी दौड़-धूप करनी पड़ी थी कि वह महीने भर बीमार रही थी। इसी घर में उसके दो लड़के मरे थे। यहीं उसका पति मरा था। मरनेवालों की स्मृतियों ने उसकी एक-एक ईंट को पवित्र कर दिया था। एक-एक पत्थर मानो उसके हर्ष से खुशी और उसके शोक से दुखी होता था। वह घर आज उससे छूटा जा रहा है।

उसने रात एक पड़ोसी के घर में काटी और दूसरे दिन 10 रु. महीने पर एक गली में दूसरा मकान ले लिया।

इस नये कमरे में इन अनाथों ने तीन महीने जिस कष्ट से काटे, वह समझनेवाले ही समझ सकते हैं। भला हो बेचारे सन्तलाल का। वह दस-पाँच रुपये से मदद कर दिया करता था। अगर सुशीला दरिद्र घर की होती, तो पिसाई करती, कपड़े सीती, किसी के घर में टहल करती; पर जिन कामों को बिरादरी नीचा समझती है, उनका सहारा कैसे लेती। नहीं तो लोग कहते, यह सेठ रामनाथ की स्त्री है ! उस नाम की भी तो लाज रखनी



थी। समाज के चक्रव्यूह से किसी तरह तो छुटकारा नहीं होता। लड़की के दो-एक गहने बच रहे थे। वह भी बिक गये। जब रोटियों ही के लाले थे, तो घर का किराया कहाँ से आता। तीन महीने बाद घर का मालिक, जो उसी बिरादरी का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति था और जिसने मृतक-भोज में ख़ूब बढ़-बढ़कर हाथ मारे थे, अधीर हो उठा। बेचारा कितना धैर्य रखता। 30 रु. का मामला है, रुपये-आठ-आने की बात नहीं है। इतनी बड़ी रकम नहीं छोड़ी जाती। आखिर एक दिन सेठजी ने आकर लाल-लाल आँखें करके कहा, %अगर तू किराया नहीं दे सकती, तो घर खाली कर दे। मैंने बिरादरी के नाते इतनी मुरौवत की। अब किसी तरह काम नहीं चल सकता।

सुशीला बोली, -सेठजी, मेरे पास रुपये होते, तो पहले आपका किराया देकर तब पानी पीती। आपने इतनी मुरौवत की, इसके लिए मेरा सिर आपके चरणों पर है, लेकिन अभी मैं बिलकुल खाली-हाथ हूँ। यह समझ लीजिए कि एक भाई के बाल-बच्चों की परवरिश कर रहे हैं। और क्या कहूँ।

सेठ-चल-चल, इस तरह की बातें बहुत सुन चुका। बिरादरी का आदमी है, तो उसे चूस लो। कोई मुसलमान होता, तो उसे चुपके से महीने-महीने दे देती, नहीं तो उसने निकाल बाहर किया होता, मैं बिरादरी का हूँ, इसलिए मुझे किराया देने की दरकार नहीं। मुझे माँगना ही नहीं चाहिए। यही तो बिरादरी के साथ करना चाहिए।

इसी समय रेवती भी आकर खड़ी हो गयी। सेठजी ने उसे सिर से पाँव तक देखा और तब किसी कारण से बोले %अच्छा, यह लड़की तो सयानी हो गयी। कहीं इसकी सगाई की बातचीत नहीं की ?

रेवती तुरंत भाग गयी। सुशीला ने इन शब्दों में आत्मीयता की झलक पाकर पुलकित कंठ से कहा, -अभी तो कहीं बातचीत नहीं हुई, सेठजी। घर का किराया तक तो अदा नहीं कर सकती, सगाई क्या करूँगी; फिर अभी छोटी भी तो है। सेठजी ने तुरंत शास्त्रों का आधार दिया। कन्याओं के विवाह की यही अवस्था है। धर्म को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। किराये की कोई बात नहीं है। हमें क्या मालूम था कि सेठ रामनाथ के परिवार की यह दशा है।

सुशीला -तो आपकी निगाह में कोई अच्छा घर है ! यह तो आप जानते ही हैं, मेरे पास लेने-देने को कुछ नहीं है।

झाबरमल - (इन सेठजी का यही नाम था) लेने-देने का कोई झगड़ा नहीं होगा; बाईजी। ऐसा घर है कि लड़की आजीवन सुखी रहेगी। लड़का भी उसके साथ रह सकता है। कुल का सच्चा; हर तरह से संपन्न परिवार है। हाँ, वह दोहाजू (दूजवर) है।

सुशीला-उम्र अच्छी होनी चाहिए, दोहाजू होने से क्या होता है।

झाबरमल-उम्र भी कुछ ज्यादा नहीं, अभी चालीसवाँ ही साल है उसका, पर देखने में अच्छा हष्ट-पुष्ट है। मर्द की उम्र उसका भोजन है। बस यह समझ लो कि परिवार का उद्धार हो जायगा।

सुशीला ने अनिच्छा के भाव से कहा, -अच्छा, मैं सोचकर जवाब दूँगी एक बार मुझे दिखा देना।

झाबरमल- दिखाने को कहीं नहीं जाना है, बाई। वह तो तेरे सामने ही खड़ा है।

सुशीला ने घृणापूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देखा। इस पचास साल के बुढ़े की यह हबस ! छाती का मांस लटककर नाभी तक आ पहुँचा

है, फिर भी विवाह की धुन सवार है। यह दुष्ट समझता है कि प्रलोभनों में पड़कर मैं अपनी लड़की उसके गले बाँध दूँगी। वह अपनी बेटी को आजीवन क़ाँरी रखेगी; पर ऐसे मृतक से विवाह करके उसका जीवन नष्ट न करेगी, पर उसने अपने क्रोध को शांत किया। समय का फेर है, नहीं तो ऐसों को उससे ऐसा प्रस्ताव करने का साहस ही क्यों होता। बोली, आपकी इस कृपा के लिए आपको धन्यवाद देती हूँ, सेठजी, पर मैं कन्या का विवाह आपसे नहीं कर सकती।

झाबरमल - तो और क्या तू समझती है कि तेरी कन्या के लिए बिरादरी में कोई कुमार मिल जायगा ?

सुशीला-मेरी लड़की क़ाँरी रहेगी।

झाबरमल-और रामनाथजी के नाम को कलंकित करेगी ?

सुशीला-तुम्हें मुझसे ऐसी बातें करते लाज नहीं आती ? नाम के लिए घर खोया, संपत्ति खोयी, पर कन्या कुएं में नहीं डुबा सकती।

झाबरमल- तो मेरा केराया दे दे।

सुशीला - अभी मेरे पास रुपये नहीं हैं।

झाबरमल ने भीतर घुसकर गृहस्थ की एक-एक वस्तु निकालकर गली में फेंक दी। घड़ा फूट गया, मटके टूट गये। संदूक के कपड़े बिखर गये। सुशीला तटस्थ खड़ी अपने अदिन की यह क़रूर क़्रीड़ा देखती रही। घर का यों विध्वंस करके झाबरमल ने घर में ताला डाल दिया और अदालत से रुपये वसूल करने की धमकी देकर चले गये। बड़ों के पास धन होता है, छोटों के पास हृदय होता है। धन से बड़े-बड़े व्यापार होते हैं; बड़े-बड़े महल बनते हैं, नौकर-चाकर होते हैं, सवारी-शिकारी होती है; हृदय से समवेदना होती है, आँसू निकलते हैं। उसी मकान से मिली हुई एक साग-भाजी बेचनेवाली खटकिन की दूकान थी। वृद्धा, विधवा निपूती स्त्री थी, बाहर से आग, भीतर से पानी। झाबरमल को सैकड़ों सुनार्यों और सुशीला की एक-एक चीज उठाकर अपने घर में ले गयी। - मेरे घर में रहो बहू। मुरौवत में आ गयी, नहीं तो उसकी मुँछें उखाड़ लेती। मौत सिर पर नाच रही है, आगे नाथ, न पीछे पगहा ! और धन के पीछे मरा जाता है। जाने छाती पर लादकर ले जायगा। तुम चलो मेरे घर में रहो। मेरे यहाँ किसी बात का खटका नहीं बस मैं अकेली हूँ। एक टुकड़ा मुझे भी दे देना।

सुशीला ने डरते-डरते कहा, -माता, मेरे पास सेर-भर आटे के सिवा और कुछ नहीं है। मैं तुम्हें केराया कहाँ से दूँगी।

बुढ़िया ने कहा, -मैं झाबरमल नहीं हूँ बहू, न कुबेरदास हूँ। मैं तो समझती हूँ, जिन्दगी में सुख भी है, दुख भी है। सुख में इतराओ मत, दुःख में घबड़ाओ मत। तुम्हीं से चार पैसे कमाकर अपना पेट पालती हूँ। तुम्हें उस दिन भी देखा था; जब तुम महल में रहती थीं और आज भी देख रही हूँ, जब तुम अनाथ हो। जो मिजाज तब था, वही अब है। मेरे धन्य भाग कि तुम मेरे घर में आओ। मेरी आँखें फूटी हैं, जो तुमसे केराया माँगने जाऊँगी। इन सांत्वना से भरे हुए सरल शब्दों ने सुशीला के हृदय का बोझ हल्का कर दिया। उसने देखा, सच्ची सज्जनता भी दरिद्रों और नीचों ही के पास रहती है। बड़ों की दया भी होती है, अहंकार का दूसरा रूप !

इस खटकिन के साथ रहते हुए सुशीला को छ्ममहीने हो गये थे। सुशीला का उससे दिन-दिन स्नेह बढ़ता जाता था। वह जो कुछ पाती,

लाकर सुशीला के हाथ में रख देती। दोनों बालक उसकी दो आँखें थीं। मजाल न थी कि पड़ोस का कोई आदमी उन्हें कड़ी आँखों से देख ले। बुढ़िया दुनिया सिर पर उठा लेती। सन्तलाल हर महीने कुछ-न-कुछ दे दिया करता था। इससे रोटी-दाल चली जाती थी।

कातिक का महीना था ज्वर का प्रकोप हो रहा था। मोहन एक दिन खेलता-कूदता बीमार पड़ गया और तीन दिन तक अचेत पड़ा रहा। ज्वर इतने जोर का था कि पास खड़े रहने से लपट-सी निकलती थी। बुढ़िया ओझे-सयानों के पास दौड़ती फिरती थी; पर ज्वर उतरने का नाम न लेता था। सुशीला को भय हो रहा था, यह टाइफाइड है। इससे उसके प्राण सूख रहे थे। चौथे दिन उसने रेवती से कहा, - बेटी, तूने बड़े पंचजी का घर तो देखा है। जाकर उनसे कह भैया बीमार है, कोई डाक्टर भेज दें। रेवती को कहने भर की देरी थी। दौड़ती हुई सेठ कुबेरदास के पास गयी। कुबेरदास बोले डाक्टर की फीस 16रू. है। तेरी माँ दे देगी ?

रेवती ने निराश होकर कहा, -अम्माँ के पास रुपये कहाँ हैं ?

कुबेरदास - तो फिर किस मुँह से मेरे डाक्टर को बुलाती है। तेरा मामा कहाँ है ? उनसे जाकर कह, सेवा समिति से कोई डाक्टर



बुला ले जायँ, नहीं तो खैराती अस्पताल में क्यों नहीं लड़के को ले जाती ? या अभी वही पुरानी बू समाई हुई है। कैसी मूर्ख स्त्री है, घर में टका नहीं और डाक्टर का हुकुम लगा दिया। समझती होगी, फीस पंचजी दे देंगे। पंचजी क्यों फीस दें ? बिरादरी का धन धर्म-कार्य के लिए है, यों उड़ाने के लिए नहीं है।

रेवती माँ के पास लौटी; पर जो कुछ सुना था, वह उससे न कह सकी। घाव पर नमक क्यों छिड़के। बहाना कर दिया, बड़े पंचजी कहीं गये हैं। सुशीला तो मुनीम से क्यों नहीं कहा, ? यहाँ क्या कोई मिठाई खाये जाता था, जो दौड़ी चली आयी ? इसी वक्त सन्तलाल एक वैद्यजी को लेकर आ पहुँचा। वैद्य भी एक दिन आकर दूसरे दिन न लौटे। सेवा-समिति के डाक्टर भी दो दिन बड़ी मित्रतों से आये। फिर उन्हें भी अवकाश न रहा और मोहन की दशा दिनोंदिन बिगड़ती जाती थी। महीना बीत गया; पर ज्वर ऐसा चढ़ा कि एक क्षण के लिए भी न उतरा। उसका चेहरा इतना सूख गया था कि देख कर दया आती थी। न कुछ बोलता, न कहता, यहाँ तक कि करवट भी न बदल सकता था। पड़े-पड़े देह की खाल फट गयी, सिर के बाल गिर गये। हाथ-पाँव लकड़ी हो गये। सन्तलाल काम से छुट्टी पाता तो आ जाता, पर इससे क्या होता; तीमारदारी दवा तो नहीं है।

एक दिन सन्ध्या समय उसके हाथ ठण्डे हो गये। माता के प्राण पहले ही से सूखे हुए थे। यह हाल देखकर रोने-पीटने लगी। मित्रतें तो बहुतेरी हो चुकी थीं। रोती हुई मोहन की खाट के सात फेरे करके हाथ बाँधकर बोली, भगवान् ! यही मेरे जन्म की कमाई है। अपना सर्वस्व खोकर भी मैं बालक को छाती से लगाए हुए सन्तुष्ट थी; लेकिन यह चोट न

सही जायगी। तुम इसे अच्छा कर दो। इसके बदले मुझे उठा लो। बस, मैं यही दया चाहती हूँ, दयामय ? संसार के रहस्य को कौन समझ सकता है ! क्या हममें से बहुतों को यह अनुभव नहीं कि जिस दिन हमने बेईमानी करके कुछ रकम उड़ायी, उसी दिन उस रकम का दुगुना नुकसान हो गया। सुशीला को उसी दिन रात को ज्वर आ गया और उसी दिन मोहन का ज्वर उतर गया। बच्चे की सेवा-शुश्रूषा में आधी तो यों ही रह गयी थी, इस बीमारी ने ऐसा पकड़ा कि फिर न छोड़ा। मालूम नहीं, देवता बैठे सुन रहे थे या क्या, उसकी याचना अक्षरशः पूरी हुई। पन्द्रहवें दिन मोहन चारपाई से उठकर माँ के पास आया और उसकी छाती पर सिर रखकर रोने लगा। माता ने उसके गले में बाँहें डालकर उसे छाती से लगा लिया और बोली, क्यों रोते हो बेटा ! मैं अच्छी हो जाऊँगी। अब मुझे क्या चिंता। भगवान् पालनेवाले हैं। वही तुम्हारे रक्षक हैं। वही तुम्हारे पिता हैं। अब मैं सब तरफ से निश्चिंत हूँ। जल्द अच्छी हो जाऊँगी।

मोहन बोला, -जिया तो कहती है, अम्माँ अब न अच्छी होंगी।

सुशीला ने बालक का चुम्बन लेकर कहा, - जिया पगली है, उसे कहने दो। मैं तुम्हें छोड़कर कहीं न जाऊँगी। मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगी। हाँ, जिस दिन तुम कोई अपराध करोगे, किसी की कोई चीज उठा लोगे, उसी दिन मैं मर जाऊँगी ?

मोहन ने प्रसन्न होकर कहा, -तो तुम मेरे पास से कभी नहीं जाओगी माँ ?

सुशीला ने कहा, -क़भी नहीं बेटा, कभी नहीं।

उसी रात को दुःख और विपत्ति की मारी हुई यह अनाथ विधवा दोनों अनाथ बालकों को भगवान् पर छोड़कर परलोक सिधार गयी।

इस घटना को तीन साल हो गये हैं, मोहन और रेवती दोनों उसी वृद्धा के पास रहते हैं। बुढ़िया माँ तो नहीं है; लेकिन माँ से बढ़कर है। रोज मोहन को रात की रखी रोटियाँ खिलाकर गुरुजी की पाठशाला में पहुँचा आती है।

छुट्टी के समय जाकर लिवा आती है। रेवती का अब चौदहवाँ साल है। वह घर का सारा काम पीसना-कूटना, चौका-बरतन, झाड़ू-बुहारू करती है। बुढ़िया सौदा बेचने चली जाती है, तो वह दूकान पर भी आ बैठती है। एक दिन बड़े पंच सेठ कुबेरदास ने उसे बुला भेजा और बोले, -तुझे दूकान पर बैठते शर्म नहीं आती, सारी बिरादरी की नाक कटा रही है। खबरदार, जो कल से दूकान पर बैठी। मैंने तेरे पाणिग्रहण के लिए झाबरमल जी को पक्का कर लिया है।

सेठानी ने समर्थन किया, -तू अब सयानी हुई बेटी, अब तेरा इस तरह बैठना अच्छा नहीं। लोग तरह-तरह की बातें करने लगते हैं। सेठ झाबरमल तो राजी ही न होते थे, हमने बहुत कह-सुनकर राजी किया है। बस, समझ ले कि रानी हो जायगी। लाखों की सम्पत्ति है, लाखों की। तेरे धन्य भाग कि ऐसा वर मिला। तेरा छोटा भाई है, उसको भी कोई दूकान करा दी जायगी। सेठ बिरादरी की कितनी बदनामी है ! सेठानी है ही।

रेवती ने लज्जित होकर कहा, -मैं क्या जानूँ, आप मामा से कहें।

सेठ -वह कौन होता है ! टके पर मुनीमी करता है। उससे मैं क्या पूछूँ। मैं बिरादरी का पंच हूँ। मुझे अधिकार है, जिस काम से

बिरादरी का कल्याण देखूँ, वह करूँ। मैंने और पंचों से राय ले ली है। सब मुझसे सहमत हैं। अगर तू यों नहीं मानेगी, तो हम अदालती कार्रवाई करेंगे। तुझे खरच-बरच का काम होगा, यह लेती जा।

यह कहते हुए उन्होंने 20रू. के नोट रेवती की तरफ फेंक दिये। रेवती ने उठाकर वहीं पुरजे-पुरजे कर डाले और तमतमाये मुख से बोली, -बिरादरी ने तब हम लोगों की बात न पूछी; जब हम रोटियों को मुहताज थे। मेरी माता मर गयी; कोई झाँकने तक न आया। मेरा भाई बीमार हुआ, किसी ने खबर तक न ली। ऐसी बिरादरी की मुझे परवाह नहीं है। रेवती चली गयी, तो झााबरमल कोठरी से निकल आये। चेहरा उदास था।

सेठानी ने कहा, -लड़की बड़ी घमंडिन है। आँख का पानी मर गया है।

झाबरमल -बीस रुपये खराब हो गये। ऐसा फाड़ा है कि जुड़ भी नहीं सकते।

कुबेरदास-तुम घबड़ाओ नहीं; मैं इसे अदालत से ठीक करूँगा। जाती कहाँ है।

झाबरमल-अब तो आपका ही भरोसा है। बिरादरी के बड़े पंच की बात कहीं मिथ्या हो सकती है ? रेवती नाबालिग थी। माता-पिता नहीं थे। ऐसी दशा में पंचों का उस पर पूरा अधिकार था। वह बिरादरी के दबाव में नहीं रहना चाहती है, न चाहे। कानून बिरादरी के अधिकार की उपेक्षा नहीं कर सकता। सन्तलाल ने यह माजरा सुना; तो दौत पीसकर बोले न जाने इस बिरादरी का भगवान् कब अंत करेंगे।

रेवती - क्या बिरादरी मुझे जबरदस्ती अपने अधिकार में ले सकती है ?

सन्तलाल- हाँ बेटी, धानिकों के हाथ में तो कानून भी है।

रेवती - मैं कह दूँगी कि मैं उनके पास नहीं रहना चाहती।

सन्तलाल - तेरे कहने से क्या होगा। तेरे भाग्य में यही लिखा था, तो किसका बस है। मैं जाता हूँ बड़े पंच के पास।

रेवती-नहीं मामाजी, तुम कहीं न जाव। जब भाग्य ही का भरोसा है; तो जो कुछ भाग्य में लिखा होगा वह होगा।

रात तो रेवती ने घर में काटी। बार-बार निद्रा-मग्न भाई को गले लगाती। यह अनाथ अकेला कैसे रहेगा, यह सोचकर उसका मन कातर हो जाता; पर झााबरमल की सूरत याद करके उसका संकल्प दृढ़ हो जाता। प्रातःकाल रेवती गंगा-स्नान करने गयी। यह इधर कई महीनों से उसका नित्य का नियम था। आज जरा अँधेरा था; पर यह कोई सन्देह की बात न थी। सन्देह तब हुआ, जब आठ बज गये और वह लौटकर न आयी।

तीसरे पहर सारी बिरादरी में खबर फैल गई सेठ रामनाथ की कन्या गंगा में डूब गई। उसकी लाश पाई गई।

कुबेरदास ने कहा-चलो, अच्छा हुआ; बिरादरी की बदनामी तो न होगी।

झााबरमल ने दुखी मन से कहा, मेरे लिए अब कोई और उपाय कीजिए।

उधर मोहन सिर पीट-पीटकर रो रहा था और बुढ़िया उसे गोद में लिये समझा रही थी बेटा, उस देवी के लिए क्यों रोते हो। जिन्दगी में उसके दुख-ही-दुख था। अब वह अपनी माँ की गोद में आराम कर रही है।



सिनेमा

## कोई मिला कूड़े में खाना ढूंढते तो कोई पागलखाने में... पाई-पाई को मोहताज ये बॉलीवुड सितारे

सिनेमा का यहीं दस्तूर है कि उगते सूरज को हर कोई सलाम करता है लेकिन ढलते सूरज को कोई नहीं पूछता। आज आपको इस आर्टिकल में हम आपको बताएंगे कुछ ऐसे सितारों के बारे में जो एक समय में सिनेमा में चमके लेकिन जैसी ही वक्त ढला तो वह सितारे पाई-पाई को मोहताज हो गये।

गीता कपूर

इस लिस्ट में पहला नाम बॉलीवुड की सुपरहिट फिल्म पाकीजा की हीरोइन गीता कपूर का है। गीता कपूर को बुढ़ापे में उनका बेटा अस्पताल में छोड़ कर भाग गया। बीमार मां की तबियत खराब हुई तो बेटे ने उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाया। मां से अस्पताल में उन्होंने कहा कि वह एटीएम से पैसे निकालने जा रहा हूँ और उन्हें छोड़ कर चला गया। मां रोती-बिलखती रही लेकिन किसी ने उनकी नहीं सुनी। अस्पताल का बिल डेढ़ लाख था लेकिन कोई मदद नहीं कहने आया। मीडिया में जब ये बात आयी तो बॉलीवुड के फिल्मकार अशोक पंडित और रमेश तौरानी ने गीता कपूर के इलाज का खर्चा उठाया और अंतिम समय तक उनका ख्याल रखा।

राज किरण

परिवारिक फिल्मों के दगाबाज भाई का किरदार निभाने वाले राज किरण ने अपने

करियर में 40 से ज्यादा फिल्मों में काई किया ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हिट रही थी। वह फिल्मों में एहसान फरामोश बेटे और भाई का रोल ज्यादा करते थे। उन्होंने फिल्म

घर हो तो ऐसा, प्यार का मंदिर, घर एक मंदिर, ये कैसा ईसाफ आदि फिल्मों में काम किया। आखिरी बार उन्हें 1997-98 में टीवी सीरियल आहट के एक एपिसोड में देखा

गया था तब से वह बॉलीवुड से गायब है। काफी समय बाद एक रिपोर्ट सामने आयी कि वह अमेरिका के एक मेंटल हॉस्पिटल में भर्ती है। वह आर्थिक परेशानी से जूझ रहे थे।

स्वास्थ्य

## मूली के पत्तों से सेहत को मिलते हैं यह जबरदस्त लाभ

मूली के पत्तों का एक सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें मूली से भी अधिक डायटरी फाइबर पाए जाते हैं। इन डायटरी फाइबर के कारण व्यक्ति का पाचन तंत्र बेहतर तरीके से काम करता है। यह मूली के पत्ते कच्चे व पेट फूलने जैसी समस्याओं से निजात दिलाते हैं।

कु. शोभा



मूली का सेवन तो हर कोई बेहद खुश होकर करता है। लेकिन आप इसके पत्तों का क्या करते हैं। शायद कुछ भी नहीं। बहुत से लोग तो सब्जीवाले से मूली के पत्ते लेते ही नहीं और जो लोग लेते हैं, वह भी उसे तोड़कर बाहर फेंक देते हैं। अगर आप भी ऐसा ही करते हैं तो हम आपको बता दें कि मूली की तरह ही उसके पत्ते भी पोषक तत्वों से पैक होते हैं। तो चलिए आज हम आपको मूली के

पत्तों से सेहत को होने वाले कुछ जबरदस्त फायदों के बारे में बता रहे हैं-

कई पोषक तत्व

मूली के पत्तों में कई तरह के आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं। अगर आप इसका सेवन करते हैं तो आपको आयरन, कैल्शियम, फोलिक एसिड, विटामिन सी और फॉस्फोरस

आदि प्राप्त होता है। यह पोषक तत्व कई तरह के शारीरिक कार्यों में सहायक होते हैं।

उच्च डायटरी फाइबर

मूली के पत्तों का एक सबसे बड़ा लाभ यह है कि इसमें मूली से भी अधिक डायटरी फाइबर पाए जाते हैं। इन डायटरी फाइबर के कारण व्यक्ति का पाचन तंत्र बेहतर तरीके से

काम करता है। यह मूली के पत्ते कब्ज व पेट फूलने जैसी समस्याओं से निजात दिलाते हैं।

कम करे थकान

चूंकि मूली के पत्तों में आयरन और फास्फोरस की मात्रा काफी होती है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। इतना ही नहीं, इसमें विटामिन सी, विटामिन ए और थायमिन जैसे पोषक तत्व थकान को दूर करने में मददगार होते हैं।

बवासीर का इलाज

आपको शायद पता न हो लेकिन बवासीर जैसी कष्टकारी शारीरिक समस्या को दूर करने में भी मूली के पत्ते लाभदायक हैं। इसमें एंटी-बैक्टीरियल प्रॉपर्टीज होती है, जो सूजन व दर्द को कम करती है। इसके इस्तेमाल के लिए मूली के पत्तों को सुखाएं और उसमें बराबर मात्रा में चीनी मिलाएं। साथ ही कुछ बूंदे पानी की मिलाकर एक पेस्ट बनाएं। आप चाहें तो इस पेस्ट का सेवन करें या फिर इसे प्रभावित स्थान पर लगाएं।

पीलिया से राहत

मूली के पत्तों का सेवन कई बीमारियों का इलाज करने में सहायक है। बवासीर की तरह ही पीलिया के इलाज में भी मूली के पत्ते लाभदायक हैं। इसके इलाज के लिए पत्तियों को क्रश करें और फिर एक पतले कपड़े की मदद से इसका अर्क निकालें। इस रस का आधा लीटर रोजाना दस दिनों तक सेवन करने से पीलिया ठीक हो जाता है।

नियंत्रित करे मधुमेह

मूली के पत्तों में ऐसे कई गुण होते हैं, जो रक्त में शर्करा के स्तर को कम करने में मदद करते हैं। इसके लिए आप मूली के पत्तों का साग बनाएं और उसका सेवन करें।

राज करण को लेकर उनकी दोस्त दीप्ति नवल ने एक पोस्ट शेयर करके उनके बारे में पूछा था। उन्होंने लिखा था कि 'फिल्मी दुनिया के एक दोस्त की तलाश में उसका नाम राज किरण है -हमें उसके बारे में कोई खबर नहीं है'। राज करण काफी डिप्रेशन में थे। उनके बारे में ताजा जानकारी जो सामने आयी थी वह यह थी कि वह न्यूयार्क में टेक्सी चलाकर अपना गुजारा कर रहे थे।

परवीन बाॅबी

अपने जमाने की सुपरस्टार हुआ करती थीं. परवीन बाॅबी की मौत 20 जनवरी 2005 को हुई थी. आज तक उनकी मौत एक मिस्ट्री बनी हुई है. उनके आखिरी वक्त में उन्हें सहारा देने के लिए कोई नहीं था. आखिरी दिनों में उनकी हालत बहुत खराब हो गयी थी. वह अकेले रहती थीं और उनकी देखभाल करने के लिए भी कोई नहीं था. परवीन बाॅबी की डेड बाॅडी उनके अपार्टमेंट में मिली और खुलासा हुआ कि फ्लैट में वह तीन दिन से मृत अवस्था में थीं.

मिलाती शर्मा

भोजपुरी सिनेमा की एक्ट्रेस मिताली शर्मा ने अपने घरवालों से बगावत करके फिल्मी दुनिया में कदम रखा था। बड़े-बड़े सितारों की तरह उन्हें भी लगा कि उनकी जिंदगी में भी एक दिन नाम और शौहरत आएगी लेकिन अफसोस सिनेमा की दुनिया के काले अंधेरे ने उनकी चमक लो निगल लिया। कुछ समय पहले पुलिस ने मिताली को एक एक गाड़ी का शिशा तोड़ते हुए गिरफ्तार किया। मिलाता मुंबई में भिख मांग कर चोरी करती थी वह मानकिस रूप से ठीक नहीं थी।

अलीसा खान

एक्ट्रेस अलीसा खान को कुछ समय पहले मुंबई की सड़को पर घूमते देखा गया। वह भी पाई-पाई को मौहताज है। उन्होंने बताया कि बाॅयफ्रेंड के साथ लड़ाई के बाद उन्हें परिवार वालों ने बदनामी के डर से घर से निकाल दिया। उनके पास न रहने का ठिकाना है न पेट भरने के लिए काम। उनका दावा है कि वह कई फिल्म में काम कर चुकी है।

गितांजली नागपाल

फिल्म फैशन में कंगना रनौत ने जिस मॉडल का किरदार निभाया था वह गितांजली नागपाल का ही था। एक समय में गितांजली नागपाल टॉप की मॉडल हुआ करती थी लेकिन नशे की लत ने उनका करियर खत्म कर दिया। कुछ समय पहले एक एक फोटोग्राफर ने उन्हें दिल्ली के हॉज खास में देखा। जब फोटोग्राफर ने उनकी तस्वीर खींची तो उन्होंने एक मॉडल की तरह पॉज दिया। ये तस्वीर सामने आने के बाद सभी हैरान रह गये। पहली बार गितांजली कूड़े के ढेर में खाने का समान खोजती देखी गई थी।

विमी

विमी 60 और 70 के दशक की खूबसूरत अभिनेत्रियों में से एक हुआ करती थीं. लेकिन लोगों की नजरों में वह तब आई जब उन्होंने सुनील दत्त के साथ हमराज की. फिल्मों में आने से पहले विमी शादीशुदा थीं. रिपोर्ट्स की मानें तो विमी के पति उन्हें काफी प्रताड़ित करते थे और इस वजह से वह अपना स्टारडम खोने लगी थीं. उन्हें फिल्में मिलना बंद हो गयीं और वह आर्थिक तंगी से गुजरने लगी. उन्हें अपना बंगला बेचना पड़ा. एक टाइम में महंगे शौक रखने वाली ये अभिनेत्री अपने आखिरी दिनों में ठेले पर विदा हुई थीं.



# विरोध प्रदर्शनों के दौरान हिंसा से लोकतंत्र कमजोर होता है -राष्ट्रपति कोविंद

**नई-दिल्ली**—राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने संशोधित नागरिकता कानून (सीएए) को ऐतिहासिक करार देते हुए कहा कि इसने महात्मा गांधी के स्वप्नों को पूरा किया है। उन्होंने सीएए सहित विभिन्न मुद्दों पर हो रहे प्रदर्शनों की ओर इशारा करते हुए कहा कि विरोध प्रदर्शनों के दौरान हिंसा से लोकतंत्र कमजोर होता है।

राष्ट्रपति ने बजट सत्र के पहले दिन संसद के ऐतिहासिक केन्द्रीय कक्ष में दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि संसद ने नयी सरकार के गठन के बाद पहले सात महीनों में कई ऐतिहासिक कानून पारित कर रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने कहा कि सरकार इस दशक को भारत का दशक बनाने के लिए मजबूत कदम उठा रही है।

सीएए सहित विभिन्न मुद्दों पर देश में चल रहे प्रदर्शनों की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा कि विरोध-प्रदर्शनों के दौरान हिंसा से लोकतंत्र कमजोर होता है। उन्होंने कहा कि देश के लोग खुश हैं कि जम्मू-कश्मीर,



लद्दाख को सात दशक बाद देश के बाकी हिस्सों के बराबर अधिकार मिले। राष्ट्रपति कोविंद ने संशोधित नागरिकता कानून को ऐतिहासिक करार देते हुए इसकी सराहना की। उन्होंने कहा कि इसने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी सहित देश के निर्माताओं के स्वप्नों को पूरा किया है। भारत ने हमेशा सर्वधर्म समभाव पर विश्वास किया। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने कहा था कि जो लोग पाकिस्तान में नहीं रह सकते,

वे भारत आ सकते हैं। संसद ने नागरिकता संशोधन कानून बनाकर उनके विचारों का सम्मान किया है।

राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद आयुष्मान भारत योजना का व्यापक असर देश के हेल्थ सेक्टर पर देखने को मिल रहा है। प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत अब तक 75 लाख गरीब अपना मुफ्त इलाज करा चुके हैं। इसके साथ ही 27 हजार से अधिक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर भी

तैयार हो चुके हैं। हालांकि इस दौरान विपक्षी सदस्यों ने हंगामा करते हुए इसका कड़ा विरोध किया। राष्ट्रपति ने कहा कि सरकार देश की अर्थव्यवस्था को पांच हजार अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

राष्ट्रपति ने पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर हो रहे कथित अत्याचारों की आलोचना की तथा विश्व समुदाय से इस संबंध में आवश्यक कदम उठाने की अपील की। उन्होंने कहा कि सभी धर्मों के लोगों को नागरिकता देने का प्रावधान वैसा ही है जैसा कि पहले था। इस अवसर पर सदन में उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी एवं अन्य केन्द्रीय मंत्री, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी, कांग्रेस नेता राहुल गांधी, विभिन्न विपक्षी नेता तथा सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के सांसद मौजूद थे।

## जामिया की घटना पर बोलीं प्रियंका-जब मंत्री और नेता उकसाएंगे तो यह सब



**नई-दिल्ली**— कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड़ा ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया परिसर के बाहर सीएए के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे लोगों पर एक युवक द्वारा गोली चलाने की घटना को लेकर बृहस्पतिवार को नरेंद्र मोदी सरकार पर निशाना साधा और कहा कि जब सरकार के मंत्री एवं नेता लोगों को उकसाएंगे तो यह सब होना मुमकिन है।

उन्होंने यह सवाल भी किया कि प्रधानमंत्री मोदी कैसी दिल्ली बनाना चाहते हैं और वह विकास के साथ खड़े हैं या फिर अराजकता के साथ खड़े हैं? प्रियंका ने ट्वीट कर कहा, जब भाजपा सरकार के मंत्री और नेता लोगों को गोली मारने के लिए उकसाएंगे, भड़काऊ भाषण देंगे, तब ये सब होना मुमकिन है। उन्होंने सवाल किया, प्रधानमंत्री को जवाब देना चाहिए कि वे कैसी दिल्ली बनाना चाहते हैं? वह हिंसा के साथ खड़े हैं या अहिंसा के साथ? वह विकास के साथ खड़े हैं या अराजकता के साथ? गौरतलब है कि राजधानी दिल्ली के जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में बृहस्पतिवार को संशोधित नागरिकता कानून के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे एक समूह पर एक व्यक्ति ने पिस्तौल से गोली चला दी और हथियार लहराते हुए आराम से निकल गया। पुलिस की भारी संख्या में तैनाती के बीच उसने ये लो आजादी का नारा भी लगाया। हालांकि बाद में व्यक्ति को पुलिस ने पकड़कर हिरासत में ले लिया।

## मेरे पिता का मेरे पद्मश्री सम्मान से क्या लेना-देना –अदनान सामी



है, लेकिन कुछ लोग अपने निहित स्वार्थ के चलते उनका नाम विवादों में घसीट रहे हैं। उन्होंने इस विवाद को लेकर सवाल खड़ा किया कि उनके पिता का उनके पुरस्कार से क्या लेना-देना है।

दरअसल सामी के पिता पाकिस्तान वायु सेना में पायलट थे और इसीलिए सामी के नाम पर विवाद है लेकिन सामी पूरे विवाद को गैरजरूरी मानते हैं। सामी को 2016 में भारत की नागरिकता दी गई थी। उन्होंने इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चुने जाने पर सरकार का अनंत आभार

**मुंबई**—पाकिस्तानी मूल के भारतीय गायक अदनान सामी को पद्मश्री पुरस्कार दिए जाने की घोषणा के बाद से शुरू हुए विवाद पर उनका कहना है कि वह एक कलाकार हैं और उनका राजनीति से कोई लेनादेना नहीं

व्यक्त किया है। उन्होंने पीटीआई भाषा से कहा, आलोचना करने वाले कुछ छोटे मोटे राजनेता हैं। वे किसी राजनीतिक एजेंडा के तहत ये कर रहे हैं और इसका मुझसे कोई लेना देना नहीं है। मैं नेता नहीं हूँ, मैं संगीतकार हूँ।

उन्होंने कहा, मेरे पिता सम्मानित लड़ाकू पायलट थे और एक पेशेवर सैनिक थे। उन्होंने अपने देश के प्रति अपना फर्ज निभाया। उसके लिए मैं उनका सम्मान करता हूँ। वह उनका जीवन था और उसके लिए उन्हें पुरस्कृत किया गया। मैंने उससे लाभ नहीं उठाया और न ही उसका श्रेय लिया। ठीक इसी प्रकार से मैं जो करता हूँ उसका श्रेय उन्हें नहीं दिया जा सकता। मेरे पुरस्कार का मेरे पिता से क्या लेना देना? यह गैरजरूरी है।

उन्होंने कहा, अब मैं एक भारतीय नागरिक हूँ, इस पुरस्कार को पाने का पूरा हकदार हूँ। वे मेरी पाकिस्तानी पृष्ठभूमि को सामने ला रहे हैं, यह हास्यास्पद और चौंकाने वाला है।

## फलों को पकाने के लिए रसायनों का उपयोग किसी को जहर देने के समान –अदालत

**नई-दिल्ली**—दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा है कि फलों को पकाने के लिए कीटनाशकों और रसायनों का उपयोग उपभोक्ता को जहर देने के समान है तथा दोषियों के खिलाफ दंडात्मक प्रावधानों को लागू करने से प्रतिरोधक असर पड़ेगा।

न्यायमूर्ति जीएस सिस्तानी और न्यायमूर्ति एजे भंबानी की पीठ ने कहा, आमों को पकाने के लिए कैल्शियम कार्बाइड जैसे रसायनों का इस्तेमाल किसी व्यक्ति को जहर देने जैसा है। उनके खिलाफ भारतीय दंड संहिता क्यों नहीं लागू की जानी चाहिए? पीठ ने कहा, ऐसे व्यक्तियों को जेल भेजें, भले ही दो दिनों के लिए और इसका प्रतिरोधक प्रभाव होगा। पीठ फलों और सब्जियों पर कीटनाशकों के उपयोग की निगरानी के लिए अदालत द्वारा शुरू की गई एक जनहित याचिका पर सुनवाई कर रही थी।

क्या कैल्शियम कार्बाइड का इस्तेमाल अब भी आम जैसे फलों को पकाने के लिए किया जा रहा है? अदालत ने सहायता के लिए सुनवाई की अगली तारीख पर प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को उपस्थित रहने को कहा।

अदालत ने कृषि मंत्रालय से सवाल किया कि क्या ऐसा कोई उपकरण (किट) मौजूद है जिससे उपभोक्ता खुद ही अपने घरों में कैल्शियम कार्बाइड की जांच कर सके। मंत्रालय ने कहा कि ऐसी कोई किट उपलब्ध नहीं है और कैल्शियम कार्बाइड की मौजूदगी की जांच केवल प्रयोगशालाओं में ही उचित उपकरणों और अतिरिक्त रसायनों की मदद से की जा सकती है।

दिल्ली सरकार ने अदालत को बताया कि वह राष्ट्रीय राजधानी के विभिन्न बाजारों से नमूने एकत्र कर रही है ताकि जांच की जा सके। सरकार ने कहा कि जागरूकता अभियान भी चलाए जा रहे हैं।

## जामिया फायरिंग पर बोले केजरीवाल-हम बच्चों को कलम दे रहे हैं, वे दे रहे हैं बंदूक

**नई-दिल्ली**—जामिया नगर में गोली चलने की घटना पर भाजपा पर तीखा हमला करते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को कहा कि उनकी सरकार ने बच्चों को कम्प्यूटर और कलम दिए जबकि “वे उन्हें दे रहे हैं बंदूक और नफरत।” दिल्ली सरकार के एक स्कूल के छात्र के आईटी-प्रौद्योगिकी सम्मेलन को संबोधित करने वाले वीडियो को ट्वीट करते हुए केजरीवाल ने हिंदी में कहा, “हमने बच्चों के हाथों में कलम और कम्प्यूटर दिए हैं और आंखों में उद्यमशीलता के सपने। वे दे रहे हैं बंदूक और नफरत।”

उन्होंने कहा, “आप अपने बच्चों को क्या देना चाहते हैं? आठ फरवरी को बताइयेगा।” जामिया नगर में बृहस्पतिवार को तब तनाव व्याप्त हो गया जब एक शख्स ने पिस्तौल से संशोधित नागरिकता कानून के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे लोगों के एक समूह

पर गोली चला दी जिसमें एक छात्र घायल हो गया। इससे पहले वह पिस्तौल लहराता हुआ आया और चिल्लाकर कहा “यह लो आजादी।” बाद में पुलिस ने उसे पकड़ लिया।

आप ने इस घटना के पीछे भाजपा की साजिश बताई। उसने कहा कि भगवा पार्टी “दंगा जैसी” स्थिति पैदा करना चाहती है और आठ फरवरी के विधानसभा चुनाव को स्थगित कराना चाहती क्योंकि उसे हार का आभास हो गया है।

**जामिया फायरिंग पर बोले नवाब मलिक, गोडसे की विचारधारा अभी भी जिंदा है-मुंबई**—महाराष्ट्र के मंत्री नवाब मलिक ने शुक्रवार को कहा कि महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे की विचारधारा अब भी जिंदा है। उन्होंने यह बयान तब दिया है जब एक दिन पहले दिल्ली में सीएए विरोधी प्रदर्शनकारियों के एक समूह पर एक शख्स ने पिस्तौल से गोली चलाई जिसमें जामिया

मिल्लिया इस्लामिया का एक छात्र घायल हो गया। राकांपा के मुख्य प्रवक्ता मलिक ने कहा कि यह घटना तब हुई जब कुछ दिन पहले भाजपा नेता और केन्द्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने दिल्ली में एक चुनावी रैली में उकसावे वाला नारा दिया था कि “गद्दारों को गोली मारो”। अल्पसंख्यक मंत्री ने आरोप लगाया कि भाजपा नेताओं की ऐसी टिप्पणियों से देश में माहौल खराब हो रहा है। मंत्री ने जामिया प्रकरण की जांच की भी मांग की। मलिक ने कहा, “यह (दिल्ली) घटना उसी दिन हुई जिस दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि (30 जनवरी, 1948) थी। इसका मतलब है कि गोडसे की विचारधारा अब भी जिंदा है और इसे बढ़ावा दिया जा रहा है।” उन्होंने कहा, “ठाकुर ने कुछ दिन पहले गद्दारों को गोली मारने के बारे में कहा था। भाजपा नेताओं की ऐसी टिप्पणियां देश का माहौल बिगाड़ रही है।”

## राहुल गांधी ने पूछा- जामिया में गोलीबारी करने वाले को पैसा किसने दिया?

**नई-दिल्ली**—कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया में संशोधित नागरिकता कानून (सीएए) के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे लोगों पर एक किशोर द्वारा गोली चलाए जाने की घटना को लेकर शुक्रवार को सवाल किया कि इस बंदूकधारी को पैसे किसने दिए थे। संसद भवन परिसर में गांधी ने गुरुवार को जामिया में गोलीबारी की घटना के बारे में पूछे जाने पर कहा, “उसको पैसे किसने दिए?”

उल्लेखनीय है कि जामिया मिल्लिया में गुरुवार को सीएए के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे लोगों पर एक किशोर ने गोलीबारी कर दी थी जिसमें एक छात्र घायल हो गया। पुलिस की मौजूदगी में गोली चलाने के बाद किशोर को यह भी कहते सुना गया कि ‘ये लो आजादी।’ कुछ देर बाद ही उसे हिरासत में ले लिया गया।